1-सूरत-फ़ातिहा

इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 7 आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ۙ﴿۱﴾ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۙ﴿۲﴾ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ؕ﴿۳﴾ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ؕ﴿۴﴾ اِہۡدِنَا
الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۙ﴿۵﴾ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ ۙ۬ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَ لَا الضَّآلِّیۡنَ ٪﴿۷﴾

आयत नं० 01 से 07

सब तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो सारे जहानों का रब (यानी पालने वाला) **है(01)** (और) **बड़ा महरबान बहुत ही रहम वाला है(02)** (जो) **इन्साफ़ के दिन का मालिक** (है जिसमें सब लोगों के अच्छे बुरे कामों का बदला मिलना) **है(03)** (या अल्लाह) **हम** (सिर्फ़)**आप की ही इबादत करते हैं और आप से ही मदद चाहते हैं(04) हम को** (ऐसा) **सीधा रास्ता बता दीजिए** (जिस पर चलने से आप राज़ी हो जाएं)**(05) रास्ता उन लोगों का जिन पर आप ने इनआम** (किया यानी आप के नेक बन्दे जिन पर आप ने करम) **किया(06)** (और रास्ता उन लोगों का) **जिन पर न आप का गुस्सा हुआ और न वो लोग राह से भटके हुए** (हैं जैसे यहूदियों को उनके बुरे कामों की वजह से दुनिया में भी सख़्त सज़ाएं दी गईं और ईसाई राह से भटक गये) **हैं(07)।**

नोटः- सूरत फ़ातिहा कुरआन शरीफ़ की सबसे पहली सूरत है। इसमें बन्दे को अल्लाह से दुआ मांगना सिखाया गया है।

हदीसः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है कि सूरत फ़ातिहा की मिसाल न तौरेत में उतरी न इन्जील में और न ज़बूर में और न खुद कुरआन में कोई दूसरी सूरत इसके जैसी है। (तिरमिज़ी)

और फ़रमाया कि सूरत फ़ातिहा हर बीमारी की शिफ़ा है। (मज़हरी)

2-सूरत-बक्रा

"इस मदनी सूरत में 40 रूकू और 286 आयतें हैं"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

الٓمّٓ ۝١ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ ۛ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝٢ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ
وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝٣ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝٤
اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝٥ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ
تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝٦ خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَعَلٰى سَمْعِهِمْ ۗ وَعَلٰٓى اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۫ وَّلَهُمْ عَذَابٌ
عَظِيْمٌ ۝٧

आयत नं० 01 से 07

अलिफ़ लाम मीम (इसका मतलब अल्लाह को पता है)(01) **यह किताब ऐसी है कि इसमें कोई शक नहीं** (यह सीधा) **रास्ता बताती है** (अल्लाह से) **डरने वालों को**(02) (और अल्लाह से डरने वाले वो लोग है) **जो कि यक़ीन रखते हैं बे देखी चीज़ों का** (इसमें वो सभी बातें आ गई जिन पर ईमान लाना ज़रूरी है) **और पाबन्दी करते हैं नमाज़ की और जो रोज़ी हमने उनको दी है उसमें से** (अल्लाह की राह में) **ख़र्च करते हैं**(03) **और वो लोग जो ईमान लाए इस** (किताब) **पर जो** (ऐ नबी) **आप पर उतारी गई** (यानी कुरआन) **और उन किताबों पर भी जो आप से पहले उतारी जा चुकी हैं** (जैसे तौरेत व इन्जील और दूसरी आसमानी किताबें) **और वो** (लोग) **आख़रत का** (पूरा) **यक़ीन रखते हैं**(04) **वो लोग ही अपने रब की तरफ़ से सीधे रास्ते पर हैं और वो लोग ही कामयाब होने वाले हैं**(05) **बेशक जो लोग काफ़िर हो चुके आप उन को** (अल्लाह से) **डराऐं या न डराएं** (उनके लिए) **बराबर है वो ईमान नहीं लाएंगे**(06) **अल्लाह ने उन के** (बुरे कामों की वजह से उनके) **दिलों पर बन्द लगा दिया है और उनके कानों पर** (भी), **और उन की आंखों पर पर्दा** (पड़ा हुआ) **है** (कि सही रास्ता दिखाई नहीं देता), **और** (इसलिए उन से ईमान की उम्मीद रखना बेकार है बल्कि) **उनके लिए** (तो) **बड़ा** (सख़्त) **अज़ाब है**(07)।

नोटः- 'अलिफ़ लाम मीम' और 'हामीम'' जैसे कुछ लफ़्ज़ जो कुरआन में कुछ सूरतों के शुरू में आए हैं इनका मतलब बताया नहीं गया बल्कि इनका मतलब अल्लाह और उसके रसूल के बीच एक राज़ है जिसे कोई दूसरा नहीं जानता। इन हर्फ़ों को हुरूफ़े मुक़त्तिआ़त कहते हैं ये क़ुरआन में 14 हैं।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿۸﴾ يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ وَمَا
يَخْدَعُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۹﴾ فِىْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ ۙ فَزَادَهُمُ اللّٰهُ مَرَضًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۢ ۙ بِمَا
كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ﴿۱۰﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ ۙ قَالُوْٓا اِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُوْنَ ﴿۱۱﴾ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ
الْمُفْسِدُوْنَ وَلٰكِنْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا كَمَآ اٰمَنَ النَّاسُ قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ كَمَآ اٰمَنَ السُّفَهَآءُ ۭ اَلَآ
اِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَآءُ وَلٰكِنْ لَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳﴾ وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚ وَاِذَا خَلَوْا اِلٰى شَيٰطِيْنِهِمْ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا
مَعَكُمْ ۙ اِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۱۴﴾ اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِىْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿۱۵﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى ۠ فَمَا رَبِحَتْ تِّجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿۱۶﴾ مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِى اسْتَوْقَدَ نَارًا ۚ
فَلَمَّآ اَضَآءَتْ مَا حَوْلَهٗ ذَهَبَ اللّٰهُ بِنُوْرِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِىْ ظُلُمٰتٍ لَّا يُبْصِرُوْنَ ﴿۱۷﴾ صُمٌّ ۢ بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا
يَرْجِعُوْنَ ﴿۱۸﴾ اَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِيْهِ ظُلُمٰتٌ وَّرَعْدٌ وَّبَرْقٌ ۚ يَجْعَلُوْنَ اَصَابِعَهُمْ فِىْٓ اٰذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ
حَذَرَ الْمَوْتِ ۭ وَاللّٰهُ مُحِيْطٌ ۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۹﴾ يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ اَبْصَارَهُمْ ۭ كُلَّمَآ اَضَآءَ لَهُمْ مَّشَوْا فِيْهِ ۙ وَاِذَآ
اَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوْا ۭ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۲۰﴾

आयत नं० 08 से 20

और लोगों में कुछ ऐसे (मुनाफ़िक़ यानी मुसलमान होने का दिखावा करने वाले) **भी हैं जो कहते हैं कि हम ईमान लाए अल्लाह और क़ियामत के दिन पर और** (असल में) **वो बिल्कुल ईमान वाले नहीं(08)** (बल्कि) **वो धोका दे**(ना चाह)**ते हैं अल्लाह को और ईमान वालों को और** (सच यह है कि) **वो** (बेवकूफ़) **किसी** (और) **को धोका नहीं देते बल्कि अपने आप को** (धोका देते हैं) **और वो इसकी समझ नहीं रखते** (कि इस धोका देने का वबाल उन्हीं पर पड़ने वाला है)(09) **उनके दिलों में बड़ी बीमारी है** (हसद यानी जलने की) **सो और भी बढ़ा दिया अल्लाह ने उन की बीमारी को** (यानी इस्लाम और मुसलमानों को तरक़्क़ी देकर ताकि और ज़्यादा जलें) **और उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है इसलिए कि** (वो) **झूट बोला करते थे(10) और जब उनको कहा जाता**

है कि ज़मीन में फ़साद न फैलाओ तो कहते हैं कि हम तो सुधार करने वाले हैं(11) सच यह है कि ये लोग ही फ़साद फैलाने वाले हैं लेकिन ये (इस बात को) **समझते नहीं हैं(12) और जब उनको कहा जाता है कि** (तुम भी) **ईमान लाओ** (उस तरह) **जैसे ईमान लाए सब लोग** (यानी सहाबा किराम) **तो कहते हैं कि क्या हम ईमान लाएं** (इस तरह) **जिस तरह ईमान लाए** (ये) **बेवक़ूफ़ लोग, जान लीजिए कि वो लोग ही बेवक़ूफ़ हैं लेकिन वो** (यह बात) **जानते नहीं** (इससे मालूम हुआ कि सहाबा किराम यानी हुज़ूर के साथ वालों का ईमान उम्मत के लिए कसौटी है जिस पर बाक़ी सारी उम्मत के ईमान को परखा जाएगा)(13) **और जब मिलते हैं** (ये मुनाफ़िक़) **मुसलमानों से तो कहते हैं कि हम ईमान ले आए हैं, और जब अकेले में मिलते हैं अपने शैतानों से** (यानी अपनी क़ौम के लोगों से) **तो कहते हैं कि बेशक हम तुम्हारे साथ हैं हम तो** (मुसलमानों से) **मज़ाक़ करते हैं(14)** (जबकि अन्जाम उनका यह होना है कि) **अल्लाह मज़ाक़** (का बरताव) **करता है उनके साथ और** (ढील देकर) **बढ़ा देता है उन की सरकशी को** (ताकि अ़ज़ाब में पकड़े जाएं, और) **ये** (लोग) **अक़्ल के अन्धे हैं(15) ये वो लोग हैं जिन्होंने हिदायत** (यानी ईमान) **के बदले में गुमराही** (यानी कुफ़्र) **को ख़रीदा, सो उन को इस कारोबार में नफ़ा न हुआ और न** (उन्हें सही) **रास्ता नसीब हुआ(16) उन की मिसाल उस आदमी के जैसी है जिसने आग जलाई हो, फिर जब उस आग ने रौशनी कर दी उस के आस पास ऐसी हालत में छीन लिया हो अल्लाह तआ़ला ने उन की** (आंखों की) **रौशनी को और छोड़ दिया हो उन को अन्धेरों में** (भटकते) **कि** (उन को) **कुछ दिखाई नहीं देता(17)** (इसी तरह ये मुनाफ़िक़ लोग सच्चा दीन जान लेने के बाद गुमराही के अन्धेरों में फंसकर ऐसे हो गये जैसे) **बहरे हैं गूंगे हैं** (और) **अन्धे हैं इस लिए वो** (ईमान की तरफ़) **नहीं लौटेंगे(18) या** (फिर) **इन मुनाफ़िक़ों की ऐसी मिसाल है जैसे बारिश हो आसमान की तरफ़ से उसमें अन्धेरी भी हो और बादल की गरज और बिजली की चमक भी जो लोग इस बारिश में चल रहे हैं वो दे लेते हैं अपनी उंगलियां अपने कानों में** (बिजली की) **कड़क की वजह से मौत के डर से, और अल्लाह तआ़ला काफ़िरों को घेरे में लिए हुए** (हैं, उसकी पकड़ से बचकर कहां जा सकते) **हैं(19)** (और) **बिजली की यह हालत है कि ऐसा लगता है कि उन की आंखों की रौशनी को उचक ले जाएगी, जहां ज़रा भी बिजली की चमक हुई तो उसकी रौशनी में चलना शुरू कर दिया और जब उन पर अन्धेरा**

हुआ तो खड़े के खड़े रह गये (यानी जब इस्लाम की तरक़्क़ी देखते हैं तो उस की सच्चाई की तरफ़ बढ़ने लगते हैं फिर लालच में पड़कर इस्लाम लाने से रूक जाते हैं), **और अल्लाह तआ़ला चाहते तो उनके सुनने और देखने की ताक़त छीन लेते, बेशक अल्लाह तआ़ल हर चीज़ की कुदरत रखते हैं** (अगर इस बात को समझ लेते तो ये मुनाफ़िक़ दिल से ईमान ले आते)(20)

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ وَ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَۙ(۲۱) الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ
فِرَاشًا وَّ السَّمَآءَ بِنَآءً۪ وَّ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْۚ فَلَا تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا وَّ اَنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ(۲۲) وَ اِنْ كُنْتُمْ فِیْ رَیْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ۪ وَ ادْعُوْا شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ دُوْنِ
اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ(۲۳) فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَ لَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِیْ وَ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ ۚۖ
اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِیْنَ(۲۴)

आयत नं० 21 से 24

ऐ लोगो अपने (उस) **रब की इबादत करो जिसने तुम को पैदा किया और उन** (लोगों) **को** (भी पैदा किया) **जो तुमसे पहले हुए ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ** (यानी कुफ़्र और गुनाह को छोड़ दो और ईमान लाओ और नेक काम करो)(21) **जिस** (हस्ती) **ने तुम्हारे वास्ते ज़मीन को फ़र्श और आसमान को छत बनाया और आसमान से पानी बरसाया फिर** (उस पानी के वास्ते से) **निकाले उस** (ज़मीन) **से फल** (और मेवे) **तुम्हारे खाने को तो** (इन नेमतों को सोच कर) **किसी को अल्लाह के बराबर न ठहराओ और** (यह बात तो) **तुम जानते** (ही) **हो** (कि ये नेमतें देना उसी का काम है)(22) **और अगर तुम को** (इस कुरआन के अल्लाह का कलाम होने में) **शक हो जो हमने अपने बन्दे** (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **पर उतारा है तो** (बना) **लाओ एक सूरत ही इस जैसी, और** (इस काम के लिए) **बुलालो उस को जो तुम्हारा मददगार हो अल्लाह के सिवा अगर तुम** (अपनी बात में) **सच्चे हो**(23) **फिर अगर यह** (काम) **न कर सको और** (बेशक) **कभी नहीं कर सकोगे तो फिर** (दोज़ख़ की) **उस आग से बचो जिस का ईंधन आदमी और पत्थर हैं** (जो) **काफ़िरों के लिए तैयार की गई है** (इसलिए कुफ़्र को छोड़ दो और ईमान ले आओ)(24)

नोटः- इससे साबित हुआ कि कुरआन अल्लाह का कलाम और पैग़म्बर का सदा रहने वाला ''मोजिज़ा'' है। न कोई आज तक ऐसी सूरत बल्कि एक आयत ला सका और न क़ियामत

तक ला सकता है।

मोजिज़ाः-उस करामत या चमत्कार को कहते हैं जो आम लोगों के बस से बाहर हो और पैग़म्बर के हाथों उसकी निशानी बन कर दिखाइ दे।

وَ بَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ كُلَّمَا رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ
رِّزْقًا ۙ قَالُوْا هٰذَا الَّذِيْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ ۙ وَ اُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا ؕ وَ لَهُمْ فِيْهَاۤ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۙۗ وَّ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۵﴾

आयत नं० 25

और (ऐ नबी) **ख़ुशख़बरी दे दीजिए उन लोगों को जो ईमान लाए और अच्छे काम किये कि उनके लिए** (ऐसे) **बाग़ हैं** (कि) **जिन के नीचे नहरें बहती हैं, जब उन को वहां खाने के लिए कोई फल मिलेगा तो** (देख कर) **कहेंगे कि यह तो वो** (फल) **ही है जो हम को इससे पहले मिला था** (और जब खाएंगे तो पता चलेगा कि) **देखने में एक जैसे हैं** (मगर उन का मज़ा पहले फलों से अलग है)**, और वहां उनके लिए पाक साफ़ बीवियां होंगी और वो वहां सदा** (सदा) **रहेंगे** (कि नेमतों के घटने या जन्नत से कभी निकलने का खटका न होगा)(25)

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَسْتَحْيٖۤ اَنْ يَّضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوْضَةً فَمَا فَوْقَهَا ؕ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ وَ
اَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَيَقُوْلُوْنَ مَا ذَاۤ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۘ يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا ۙ وَّ يَهْدِيْ بِهٖ كَثِيْرًا ؕ وَ مَا يُضِلُّ بِهٖۤ
اِلَّا الْفٰسِقِيْنَ ﴿۲۶﴾ الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ ۠ وَ يَقْطَعُوْنَ مَاۤ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖۤ اَنْ يُّوْصَلَ وَ
يُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۲۷﴾ كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَ كُنْتُمْ اَمْوَاتًا فَاَحْيَاكُمْ ۚ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ
ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۲۸﴾ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۗ ثُمَّ اسْتَوٰۤى اِلَى السَّمَآءِ فَسَوّٰىهُنَّ
سَبْعَ سَمٰوٰتٍ ؕ وَ هُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۲۹﴾

आयत नं० 26 से 29

नोटः- कुरआन का इनकार करने वाले कुछ लोगों को शक था कि कुरआन में मक्खी और मच्छर जैसी चीज़ों का ज़िक्र आया है जो अल्लाह के कलाम की शान के ख़िलाफ़ है इस बारे में कहा गया।

बेशक अल्लाह तआला इस बात से नहीं शर्माते कि (किसी बात को समझाने के लिए) **मच्छर या उससे भी ज़्यादा छोटी चीज़ की मिसाल बयान करें, बस जो लोग मोमिन हैं उन**

को इस बात का यक़ीन है कि यह मिसाल जो उनके रब की तरफ़ से आई है ठीक है, और जो काफ़िर हैं वो कहते हैं कि अल्लाह का इस (छोटी सी चीज़ की) **मिसाल से क्या मतलब था,** (और) **इस मिसाल से अल्लाह तआ़ला बहुत** (से लोगों) **को राह से भटका देते हैं और बहुत** (से लोगों) **को सीधा रास्ता दिखा देते हैं** (यानी इन मिसालों से बन्दों को आज़माया जाता है कि कौन यक़ीन लाता है और कौन शक या ऐतराज़ करता है), **मगर इन मिसालों से वो** (लोग) **ही राह से भटकते हैं जो नाफ़रमान** (और बड़े गुनाहगार) **हैं**(26) (यानी) **जो अल्लाह से किया हुआ पक्का वादा तोड़ते हैं, और उस चीज़ को तोड़ते हैं जिसको अल्लाह तआ़ला ने जोड़ने को कहा है** (यानी ख़ुदा और उसके बन्दों का हक़ अदा नहीं करते) **और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं, ये लोग बड़े नुक़सान** (उठाने वालों) **में हैं** (क्योंकि असल नुक़सान आख़रत का नुक़सान है जो काफ़िरों को होने वाला है)(27) **कैसे इनकार करते हो अल्लाह तआ़ला का** (कि रसूल का इनकार भी अल्लाह तआ़ला का इनकार है) **जब कि तुम बेजान** (चीज़) **थे बस तुम को ज़िन्दगी दी, फिर तुम को** (उम्र पूरी होने पर) **मौत देगा फिर** (क़ियामत में तुम्हारे कण-कण को जमा करके) **तुम को** (दोबारा) **ज़िन्दा करेगा फिर तुम उसी** (पाक ज़ात) **की तरफ़ लौटाए जाओगे** (जहां तुम्हारे अच्छे बुरे कामों का बदला मिलेगा)(28) **वो** (अल्लाह) **ही है जिस ने पैदा किया तुम्हारे लिए जो कुछ ज़मीन में है सब का सब, फिर इरादा किया आसमान की तरफ़ बस ठीक बनाए सात आसमान, और वो हर चीज़ का जानने वाला है** (इसलिए दुनिया का पैदा करना उसके लिए कोई मुश्किल काम नहीं)(29)।

وَ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّیْ جَاعِلٌ فِی الْاَرْضِ خَلِیْفَةً ؕ قَالُوْۤا اَتَجْعَلُ فِیْهَا مَنْ یُّفْسِدُ فِیْهَا وَ یَسْفِكُ الدِّمَآءَ ۚ
وَ نَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَ نُقَدِّسُ لَكَ ؕ قَالَ اِنِّیْۤ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۰﴾ وَ عَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ
عَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ ۙ فَقَالَ اَنْۢبِـُٔوْنِیْ بِاَسْمَآءِ هٰۤؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۳۱﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَاۤ اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ؕ
اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِیْمُ الْحَكِیْمُ ﴿۳۲﴾ قَالَ یٰۤاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ بِاَسْمَآىِٕهِمْ ۚ فَلَمَّاۤ اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَآىِٕهِمْ ۙ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ
اِنِّیْۤ اَعْلَمُ غَیْبَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۙ وَ اَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَ مَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿۳۳﴾

आयत नं० 30 से 33

और (उस वक़्त की बात सुनो) **जब आप के रब ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं ज़मीन में अपना नाइब** (यानी प्रतिनिधि) **बनाने वाला हूं, फ़रिशतों ने कहा क्या आप उस को बनाएंगे जो**

ज़मीन में फ़साद फैलाए और ख़ून बहाए (यानी उन में बुरे लोग भी होंगे और फ़रिशतों में बुराई का माद्दा नहीं रक्खा गया है), **और हम** (तो) **आप की तस्बीह करते और पाक ज़ात को याद करते रहते हैं** (फिर उन के नाइब बनाने में क्या भलाई छुपी हो सकती है), **कहा** (अल्लाह तआ़ला ने) **बेशक** (इस बात को) **मैं जानता हूं तुम नहीं जानते** (मतलब यह कि दुनिया का काम चलाने के क़ाबिल इन्सान को बनाया गया फ़रिशते बेशक मासूम हैं)(30) **और** (फ़रिशतों को यह बात समझाने के लिए) **अल्लाह तआ़ला ने आदम** (अ़लैहिस्सलाम) **को सब चीज़ों के नाम** (और उनके नफ़े-नुक़सान) **सिखाए फिर उन सब चीज़ों को फ़रिशतों के सामने करके कहा मुझ को उन के नाम बताओ अगर तुम सच्चे हो**(31) (फ़रिशते) **बोले पाक है आप की ज़ात हम को पता नहीं मगर उतना ही जितना आपने हम को सिखाया, बेशक आप सब कुछ जानने वाले हिकमत वाले हैं**(32) (फिर अल्लाह तआ़ला ने आदम अलैहिस्सलाम से) **कहा कि ऐ आदम फ़रिशतों को उन चीज़ों के नाम बता दो, फिर जब बता दिये उसने** (यानी आदम अलैहिस्सलाम ने) **उन चीज़ों के नाम** (और उनके नफ़े और नुक़सान तो अल्लाह तआ़ला ने) **कहा क्या मैं न कहता था तुम से कि मैं अच्छी तरह जानता हूं आसमान और ज़मीन की छुपी हुई चीज़ों को और** (उसको भी) **जो तुम दिखाते हो और** (जो तुम) **छुपाते हो**(33)।

नोटः- फ़रिशते भी उस वक़्त मौजूद थे जब आदम अ़लैहिस्सलाम को सिखाया गया लेकिन उन्होंने तो सिर्फ़ उतना ही जानना काफ़ी समझा जो बताया गया और आदम अलैहिस्सलाम ने पूरी जानकारी ली जो कि इन्सान की आदत है।

وَ اِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى وَ اسْتَكْبَرَ ٭ وَ كَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۳۴﴾

आयत नं० 34

और (उस वक़्त की बात सुनो) **जब हमने फ़रिशतों को हुक्म दिया कि आदम** (अ़लैहिस्सलाम) **को सजदा करो तो सब ने सजदा किया सिवाए शैतान के, कि उसने** (हुक्म) **न माना और घमन्ड किया और वो** (अल्लाह के यहां) **काफ़िरों में से** (था और इससे यह भी मालूम हुआ कि सजदे का हुक्म फ़रिशतों के साथ इबलीस को भी दिया गया) **था**(34)।

नोटः- आदम अलैहिस्सलाम को फ़रिशतों का सजदा और यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को उनके मां बाप और

भाइयों का सजदा जिसका ज़िक्र कुरआन में आया है यह सजदा-ए-ताज़ीमी था यानी इ़ज़्ज़त के लिए था न कि इबादत के लिए जो उनकी शरीअ़त में जाइज़ था और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत को क्योंकि शिर्क के शक शुबह से भी पाक रखना था इसलिए इ़ज़्ज़त में रूकू करना या सजदा करना जाइज़ नहीं रक्खा गया।

وَ قُلْنَا یٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَ زَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَ كُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَیْثُ شِئْتُمَا ۪ وَ لَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ
الظّٰلِمِیْنَ ۝۳۵ فَاَزَلَّهُمَا الشَّیْطٰنُ عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِیْهِ ۪ وَ قُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَ لَكُمْ فِی
الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّ مَتَاعٌ اِلٰى حِیْنٍ ۝۳۶

आयत नं० 35 से 36

और हमने (आदम अ़लैहिस्सलाम से) **कहा ऐ आदम तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो और इसमें बेफ़िक्री से जो चाहो खाओ** (यानी न कमाने की फ़िक्र और न ख़त्म हो जाने की फ़िक्र) **और इस** (ख़ास क़िस्म के) **पेड़ के पास भी मत जाना** (यानी उससे कोई चीज़ मत खाना) **वर्ना तुम ज़ालिम** (हो जाओगे मतलब यह कि अपनी जान पर ज़ुल्म करने वाले यानी नुक़सान उठाने वाले) **हो जाओगे(35) फिर** (यह हुआ कि) **शैतान ने उनको भुला दिया उस पेड़ से** (यानी बहका कर उस पेड़ का फल खाने को उक्सा दिया) **फिर निकाला उन को** (यानी निकलने का सामान कर दिया) **उस इ़ज़्ज़त व आराम** (के घर यानी जन्नत) **से कि जिसमें** (वो रहते) **थे और हमने हुक्म दिया कि तुम सब नीचे उतरो और तुम में कुछ** (लोग) **कुछ** (लोगों) **के दुशमन रहेंगे** (यानी एक सज़ा तो जन्नत से ज़मीन पर उतरना और दूसरी सज़ा आपसी दुशमनी है) **और तुम को ज़मीन में कुछ ज़माने तक ठहरना और** (दुनिया में) **काम चलाना है** (यानी कुछ मुद्दत के बाद उस घर को छोड़ना पड़ेगा फिर अल्लाह तआ़ला के सामने पेश होना होगा)(36)।

नोटः- बड़ों की छोटी ग़लती भी बड़ी समझी जाती है चूंकि आदम अलैहिस्सलाम पैग़म्बर हैं इसलिए उस छोटी सी भूल पर बड़ी पकड़ हुई। और वो कोई जान बूझ कर की हुई ग़लती न थी जिसे गुनाह कहा जाए।

فَتَلَقّٰۤی اٰدَمُ مِنۡ رَّبِّہٖ کَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَیۡہِ ؕ اِنَّہٗ ہُوَ التَّوَّابُ الرَّحِیۡمُ ﴿۳۷﴾ قُلۡنَا اہۡبِطُوۡا مِنۡہَا جَمِیۡعًا ۚ فَاِمَّا یَاۡتِیَنَّکُمۡ
مِّنِّیۡ ہُدًی فَمَنۡ تَبِعَ ہُدَایَ فَلَا خَوۡفٌ عَلَیۡہِمۡ وَ لَا ہُمۡ یَحۡزَنُوۡنَ ﴿۳۸﴾ وَ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا وَ کَذَّبُوۡا بِاٰیٰتِنَاۤ اُولٰٓئِکَ
اَصۡحٰبُ النَّارِ ۚ ہُمۡ فِیۡہَا خٰلِدُوۡنَ ﴿۳۹﴾

आयत नं० 37 से 39

फिर आदम (अलैहिस्सलाम) **ने अपने रब से** (तौबा की) **कुछ बातें सीख लीं फिर** (तौबा की तो) **अल्लाह तआ़ला ने उन की तौबा क़ुबूल की** (यानी मुआ़फ़ कर दिया), **बेशक वो बड़ा मुआ़फ़ करने वाला रहमत वाला है(37)** (लेकिन चूंकि इस दुनिया को बसाना था इसलिए) **हमने हुक्म दिया कि नीचे जाओ इस जन्नत से सब के सब, फिर अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से कोई हिदायत** (यानी शरीअ़त का हुक्म) **आए तो जो आदमी उस हुक्म पर चलेगा तो उस को** (दुनिया व आख़रत में) **न कोई डर होगा और न कोई ग़म होगा(38) और जो लोग काफ़िर हुए और हमारी आयतों को झुटलाया वो दोज़ख़ में जाने वाले हैं, वो उस में सदा रहेंगे(39)।**

नोटः- आदम अ़लैहिस्सलाम की तौबा क़ुबूल हो जाने के बाद भी जन्नत से उतरने का हुक्म दुनिया को बसाने के लिए दिया जिसका इरादा अल्लाह तआ़ला पहले ही कर चुके थे और फ़रिशतों से कह चुके थे कि मैं दुनिया में इन्सान को अपना नाइब बनाने वाला हूं।

یٰبَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ اذۡکُرُوۡا نِعۡمَتِیَ الَّتِیۡۤ اَنۡعَمۡتُ عَلَیۡکُمۡ وَ اَوۡفُوۡا بِعَہۡدِیۡۤ اُوۡفِ بِعَہۡدِکُمۡ ۚ وَ اِیَّایَ فَارۡہَبُوۡنِ ﴿۴۰﴾ وَ
اٰمِنُوۡا بِمَاۤ اَنۡزَلۡتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَکُمۡ وَ لَا تَکُوۡنُوۡۤا اَوَّلَ کَافِرٍۭ بِہٖ ۪ وَ لَا تَشۡتَرُوۡا بِاٰیٰتِیۡ ثَمَنًا قَلِیۡلًا ۫ وَّ اِیَّایَ
فَاتَّقُوۡنِ ﴿۴۱﴾ وَ لَا تَلۡبِسُوا الۡحَقَّ بِالۡبَاطِلِ وَ تَکۡتُمُوا الۡحَقَّ وَ اَنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۴۲﴾

आयत नं० 40 से 42

ऐ बनी इस्राईल याद करो तुम लोग मेरे उन अहसानों को जो मैंने तुम पर किये हैं और पूरा करो तुम मुझ से किये वादे को (यानी उन सब हुक्मों को मानो जिन में सब रसूलों पर ईमान लाना भी शामिल है) **तो मैं पूरा करूंगा तुम से किये वादे को** (यानी गुनाह मुआफ़ करके जन्नत में दाख़िल करूंगा) **और** (तुम किसी और से नहीं बल्कि सिर्फ़) **मुझसे ही डरो(40) और ईमान ले आओ इस किताब पर जो मैंने उतारी** (यानी क़ुरआन) **जो तसदीक़ करने वाली है उस किताब की जो तुम्हारे पास है** (यानी तौरेत व इन्जील) **और तुम इस** (क़ुरआन) **के सब से पहले**

इनकार करने वाले न बनो, और मेरी आयतों के बदले थोड़ा मोल न लो (यानी शरीअ़त के हुक्मों को दुनिया के लालच में न बदलो) **और मुझ से ही पूरी तरह डरो**(41) **और मत मिलाओ सही में ग़लत** (को) **और मत छुपाओ सच को जान बूझ कर** (कि ये सब बातें हराम हैं)(42)

नोटः- इस्राईल हज़रत याकूब का दूसरा नाम है जिन के बारह बेटे थे जो आगे चल कर बारह बड़े ख़ानदान बन गये इस क़बीले को बनी इस्राईल कहा गया सभी यहुदी और अक्सर ईसाई उसी नस्ल से थे और ज़्यादातर पैग़म्बर उन्हीं की औलाद में से हुए।

وَ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتُوا الزَّكٰوةَ وَ ارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ۝٤٣ اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَ تَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَ اَنْتُمْ
تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝٤٤ وَ اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَ الصَّلٰوةِ ؕ وَ اِنَّهَا لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِيْنَ ۝٤٥ الَّذِيْنَ
يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَ اَنَّهُمْ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ۝٤٦ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَ اَنِّيْ
فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝٤٧ وَ اتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّ لَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَّ لَا يُؤْخَذُ
مِنْهَا عَدْلٌ وَّ لَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝٤٨ وَ اِذْ نَجَّيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يُذَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَ
يَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَ فِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ۝٤٩

आयत नं० 43 से 49

और (ऐ किताब वालो मुसलमान हो कर) **नमाज़ की पाबन्दी करो और ज़कात अदा करो और झुको नमाज़ में झुकने वालों के साथ**(43) (और तुम) **यह क्या करते हो कि लोगों को नेक काम करने** (यानी नबी पर ईमान लाने और उनकी बात मानने) **को कहते हो और अपनी ख़बर नहीं लेते** (कि ख़ुद नेक कामों का इरादा नहीं करते) **जब कि तुम किताब पढ़ते रहते हो** (और उन में इन बातों का हुक्म है)**, तो क्या फिर तुम इतना भी नहीं समझते**(44) **और** (अगर तुम को दुनिया के माल व इ़ज़्ज़त की वजह से ईमान लाना मुश्किल लगता हो तो) **सब्र और नमाज़ से काम लो, और वो** (नमाज़ की पाबन्दी) **भारी** (तो) **है मगर उन पर** (कुछ भारी नहीं) **जो अल्लाह से डरने वाले हैं**(45) (और) **जिन को यह यक़ीन है कि वो अपने रब से मिलने वाले हैं** (तो उस वक़्त इसका इनआ़म मिलेगा) **और उसी की तरफ़ लौटकर जाना है** (तो उस वक्त इसका हिसाब देना होगा)(46) **ऐ बनी इस्राईल तुम लोग मेरी उस नेमत को याद करो जो मैंने तुम को इनआ़म में दी थी** (ताकि शुक्र करने और शरीअ़त पर चलने का शौक़ हो) **और इस**

(बात) **को** (याद करो) **कि मैंने तुम को** (ख़ास-ख़ास बातों में) **सारी दुनिया के लोगों पर बड़ाई दी(47) और डरो तुम ऐसे दिन से** (यानी क़ियामत के दिन से) **कि** (जिसमें) **न तो कोई आदमी किसी आदमी के कुछ काम आ सकता है और न किसी आदमी की तरफ़ से कोई सिफ़ारिश मन्ज़ूर हो सकती है** (जब कि ख़ुद उस आदमी में ईमान न हो जिस की सिफ़ारिश करता है) **और न किसी आदमी की तरफ़ से कोई बदला** (या जुर्माना) **लिया जा सकता है और न उन को** (किसी तरफ़ से) **कोई मदद पहुचेंगी(48) और** (वो दिन याद करो) **जब कि हम ने तुम** (लोगों के बाप दादों) **को फ़िरऔन वालों** (के चंगुल) **से आज़ादी दी जो** (उन को) **सताने की धुन में रहते थे** (और) **गले काटते थे तुम्हारी नर औलाद के और ज़िन्दा छोड़ देते थे तुम्हारी औरतों को, और इसमें तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारा एक बड़ा भारी इम्तिहान** (था यानी तुम्हारे सब्र का इम्तिहान) **था(49)**

नोटः- किसी ने फ़िरऔन बादशाह को यह बता दिया था कि बनी इस्राईल में एक ऐसा लड़का होगा जिसके हाथों तेरी हुकूमत जाती रहेगी इसलिए वो नये पैदा होने वाले बच्चों को मारने लगा और लड़कियों से कोई ख़तरा न था इसलिए उन को छोड़ देता था फिर उन से काम लेता था। और ये सब क़िस्से मौजूदा लोगों के बड़ों के साथ हुए थे मगर उन की औलाद को ये बातें याद दिलाई जा रही हैं।

وَ اِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَاَنْجَيْنٰكُمْ وَ اَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ وَ اَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ۝

आयत नं० 50

और (वो वक़्त याद करो) **जब कि हमने तुम्हारे** (रास्ता देने के) **लिए दरिया को फाड़ दिया फिर हमने तुम को** (डूबने से) **बचा लिया और डुबो दिया फिरऔन** (और उस) **के लोगों को और तुम** (इस क़िस्से को) **देख रहे थे(50)।**

नोटः- यह क़िस्सा उस वक़्त हुआ जब मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के हुक्म से अपनी क़ौम को चुपके से लेकर चले रास्ते में दरिया पड़ा और फ़िरऔन उस वक़्त अपनी फ़ौजों के साथ पीछा करता हुआ आ पहुंचा तो अल्लाह के हुक्म से दरिया ने बनी इस्राईल को रास्ता दिया और फ़िरऔन व उस की फ़ौज डूब कर ख़त्म हो गई और यह सारा माजरा बनी इस्राईल

देख रहे थे।

وَ اِذْ وٰعَدْنَا مُوْسٰى اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَ اَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿٥١﴾

आयत नं० 51

और (वो वक़्त याद करो) **जब कि हमने मूसा** (अलैहिस्सलाम) **से** (तौरेत देने के लिए) **चालीस रातों का वादा किया था फिर तुम लोगों ने** (इबादत के लिए) **बछड़ा बना लिया मूसा** (अलैहिस्सलाम) **के** (तूर पर जाने के) **बाद और तुम ने** (इस काम में खुले) **ज़ुल्म पर कमर बान्ध रक्खी थी(51)।**

नोटः- फिरऔन के डूब जाने के बाद मूसा अ़लैहिस्सलाम कोहे तूर पर बुलाए गये जहां चालीस दिन इबादत करने के बाद आप को तौरेत दी गई उनके पीछे सामरी नामी एक आदमी ने क़ौम को बछड़े की पूजा के लिए बहका लिया था।

ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَ اِذْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَ الْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿٥٣﴾ وَ
اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ اَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوْبُوْٓا اِلٰى بَارِىٕكُمْ فَاقْتُلُوْٓا
اَنْفُسَكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِىٕكُمْ ؕ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿٥٤﴾

आयत नं० 52 से 54

फिर भी हमने (तुम्हारे तौबा करने पर) **तुम को मुआ़फ़ कर दिया तुम से इतनी बड़ी ग़लती हो जाने के बाद ताकि तुम अहसान मानोगे(52) और** (वो वक़्त याद करो) **जब हम ने मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को** (तौरेत) **किताब दी** (सही और ग़लत में) **फ़ैसले की चीज़** (यानी हुक्म) **ताकि तुम सीधी राह चलो(53) और** (वो वक़्त याद करो) **जब मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम बेशक तुमने बछड़े की पूजा करके अपना बड़ा नुक़सान किया तो तुम अब अपने पैदा करने वाले से तौबा करो फिर कुछ लोग** (जिन्होंने बछड़े की पूजा नहीं की) **कुछ लोगों को** (जिन्होंने बछड़े की पूजा की) **क़त्ल करो, यह** (काम) **तुम्हारे लिए तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़दीक बेहतर होगा, फिर** (उस काम के करने से) **अल्लाह तआ़ला ने** (अपनी महरबानी से) **तुम्हारी तौबा क़बूल कर ली, बेशक वो तो ऐसे ही हैं कि तौबा क़बूल कर लेते हैं और महरबानी करते हैं(54)।**

नोटः- तौबा क़बूल होने का यह तरीक़ा बताया गया था कि दुनिया में सज़ाए मौत देकर आख़रत की

सज़ा से मुआ़फ़ी देदी गई।

وَ اِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْكُمُ الصّٰعِقَةُ وَ اَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ۝٥٥ ثُمَّ بَعَثْنٰكُمْ
مِّنْۢ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٥٦ وَ ظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَ السَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ
طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَ مَا ظَلَمُوْنَا وَ لٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝٥٧ وَ اِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوْا مِنْهَا
حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَّ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّ قُوْلُوْا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطٰيٰكُمْ ؕ وَ سَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ۝٥٨ فَبَدَّلَ
الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝٥٩ ع

आयत नं० 55 से 59

और (वो वक़्त याद करो) **जब** (मूसा अलैहिस्सलाम ने कोहे तूर से तौरेत लाकर पेश की और बताया कि यह अल्लाह की किताब है तो) **तुम लोगों ने** (यह) **कहा कि ऐ मूसा हम तुम्हारे कहने से कभी न मानेंगे** (कि यह अल्लाह का कलाम है) **यहां तक कि हम** (ख़ुद) **अल्लाह तआ़ला को सामने न देख लें** (इस बेअदबी पर) **तुम पर बिजली की कड़क आ पड़ी और तुम** (उस बिजली का आना) **आंखों से देख रहे** (थे और उस बिजली की कड़क से वो सब मर गये) **थे(55) फिर हमने** (मूसा अलैहिस्सलाम की दुआ़ से) **तुम को ज़िन्दा कर उठाया तुम्हारे मर जाने के बाद ताकि तुम अहसान मानोगे(56) और** (जब मिस्र से आज़ाद होने के बाद एक मुद्दत तक तिया नाम के खुले मैदान में रहना पड़ा तो उस वक़्त) **हमने तुम पर बादल का साया किया और** (छुपे ख़ज़ाने से तुम्हारे लिए) **हमने तुम्हारे पास मन्ना् सलवा** (एक ख़ास क़िस्म का खाना) **पहुंचाया,** (और तुम को इजाज़त दी कि) **खाओ पाक चीज़ों से जो हमने तुम को दी हैं,** (मगर वो लोग इसमें भी ख़िलाफ़ बात कर बैठे कि खाने को अगले वक़्त के लिए जमा करके रखने लगे जिससे वो खाना सड़ने लगा यानी अल्लाह के वादे पर भरोसा न किया) **और** (इससे) **उन्होंने हमारा कोई नुक़सान नहीं किया लेकिन अपना ही नुक़सान करते रहे(57) और जब** (वहां तुम ने मनपसन्द चीज़ें मांगी तो) **हमने हुक्म किया कि तुम इस शहर के अन्दर जाओ फिर खाओ इस** (की चीज़ों में) **से जिस जगह से तुम पसन्द करो जितना चाहो और** (पहली ग़लतियों की मुआ़फ़ी के लिए यह हुक्म भी दिया कि जब अन्दर जाने लगो तो) **दरवाज़े में झुके झुके और** (ज़बान से यह) **कहते जाना कि तौबा है** (तौबा है) **हम तुम्हारी** (पहली) **ख़ताएं तो** (सब की सब) **मुआ़फ़ कर देंगे, और अभी और भी ज़्यादा देंगे दिल से नेक काम करने वालों को(58)। तो ज़ालिमों ने उस बात को बदल कर**

जिस (के कहने) **का उन को हुक्म दिया गया था एक और बात बना ली** (मतलब यह कि तौबा का मज़ाक़ उड़ाया) **इस पर हम ने उन ज़ालिमों पर एक आसमानी मुसीबत भेजी इस वजह से कि वो हुक्म के ख़िलाफ़ करते थे(59)।**

नोटः- वो आसमानी मुसीबत ताऊन यानी प्लेग की बीमारी थी जिसमें बहुत लोग मारे गये कुछ ने लिखा है कि सत्तर हज़ार लोग मारे गये थे।

وَ اِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ فَقُلْنَا اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ؕ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ
اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ كُلُوْا وَ اشْرَبُوْا مِنْ رِّزْقِ اللّٰهِ وَ لَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝۶۰ وَ اِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ
نَّصْبِرَ عَلٰى طَعَامٍ وَّاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ مِنْۢ بَقْلِهَا وَ قِثَّآئِهَا وَ فُوْمِهَا وَ عَدَسِهَا وَ
بَصَلِهَا ؕ قَالَ اَتَسْتَبْدِلُوْنَ الَّذِىْ هُوَ اَدْنٰى بِالَّذِىْ هُوَ خَيْرٌ ؕ اِهْبِطُوْا مِصْرًا فَاِنَّ لَكُمْ مَّا سَاَلْتُمْ ؕ وَ ضُرِبَتْ
عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَ الْمَسْكَنَةُ ۗ وَ بَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَ يَقْتُلُوْنَ
النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّ كَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ۝۶۱

आयत नं० 60 से 61

और (वो वक़्त भी याद करो) **जब** (हज़रत) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने** (तिया के सूखे मैदान में तुम्हारी प्यास पर) **पानी की दुआ मांगी अपनी क़ौम के वास्ते इस पर हमने** (मूसा अलैहिस्सलाम को) **हुक्म दिया कि अपने इस अ़सा को फ़लां पत्थर पर मारो** (इससे पानी निकल आएगा), **बस** (अ़सा पत्थर पर मारने की देर थी कि यह मोजिज़ा हुआ कि) **फ़ौरन उस** (पत्थर से पानी के) **बारह चश्मे फूट निकले,** (और बनी इस्राईल के बारह ही ख़ानदान थे सो) **हर-हर आदमी ने अपने पानी पीने की जगह को जान लिया,** (और हमने यह नसीहत की, कि खाने को) **खाओ और** (पीने को) **पियो अल्लाह की नेमतों में से और हद से मत निकलो ज़मीन में फ़साद** (व फ़ितना) **करते हुए(60) और** (वो वक़्त याद करो) **जब तुम लोगों ने** (यह) **कहा कि ऐ मूसा हम** (रोज़ाना) **एक ही क़िस्म के खाने पर कभी न रहेंगे आप हमारे वास्ते दुआ करें अपने रब से कि वो हमारे लिए ऐसी चीज़ें पैदा करे जो ज़मीन में उगा करती हैं** (जैसे) **सब्ज़ी** (हुई) **ककड़ी** (हुई) **गेंहू** (हुआ) **मसूर** (हुई) **प्याज़** (हुई), **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा क्या तुम लेना चाहते हो घटिया चीज़ों को अच्छी चीज़ों के बदले,** (अच्छा अगर नहीं मानते तो) **किसी शहर में** (जाकर) **उतरो तो** (वहां) **तुम**

को वो चीज़ें मिलेंगी जिन को तुम मांगते हो, और (ऐसी ऐसी बेअदबी की बातों से वो) **ज़लील हो गये** (कि दूसरों की नज़रों में इज़्ज़त न रही) **और** (उनमें) **गिरावट आ गई** (कि हौसला न रहा) **और अल्लाह का ग़ुस्सा उन पर पड़ा,** (और) **यह इस वजह से** (हुआ) **कि वो लोग अल्लाह के हुक्म को नहीं मानते थे और क़त्ल कर दिया करते थे पैग़म्बरों को** (कि वो क़त्ल उन के नज़दीक भी) **नाहक़** (होता था), **और** (यह अल्लाह तआ़ला का ग़ुस्सा) **इस वजह से** (हुआ) **कि उन लोगों ने कहना न माना और हद से निकल निकल जाते थे(61)।**

नोटः- यह क़िस्सा भी तिया के मैदान में हुआ जब मन्ना् सलवा जैसी नेमत से उकता कर उन्होंने सब्ज़ियों और ग़ल्लों की मांग की।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ الَّذِيْنَ هَادُوْا وَ النَّصٰرٰى وَ الصّٰبِـِٕيْنَ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ عَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ
اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَ لَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۶۲﴾

आयत नं० 62

बेशक जो लोग मुसलमान हुए (चाहे) **वो लोग यहूदी** (क़ौम से) **हों और** (चाहे) **नसारा** (यानी ईसाई क़ौम से) **हों और** (चाहे) **साइबीन** (फ़िरक़े से) **हों जो** (भी उन में से) **अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान लाए और नेक काम किये तो उनका सवाब उनके रब के यहां मिलेगा, और** (वहां) **उनको न कोई डर होगा और न कोई ग़म होगा(62)।**

नोटः- मतमलब यह है कि कोई आदमी पहले से चाहे कैसा ही हो लेकिन ईमान लाकर नेक काम करेगा तो बख़्शा जाएगा उस की पहली सब ख़ता मुआ़फ़ हो जाएंगी इस में तौबा के लिए उकसाया गया है।

وَ اِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَ رَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا مَاۤ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّ اذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۶۳﴾

आयत नं० 63

और (वो वक़्त याद करो) **जब हमने तुमसे वादा लिया** (कि तौरेत के हुक्मों पर चलेंगे) **और** (उस वादे को क़ुबूल कराने के लिए) **हमने तूर पहाड़ को उठा कर तुम्हारे** (सरों के) **ऊपर लटका दिया,** (और उस वक़्त कहा) **कि** (जल्दी) **क़ुबूल करो जो किताब हमने तुम को दी है** (यानी

तौरेत) **मज़बूती के साथ और याद रक्खो जो हुक्म इस** (किताब) **में है ताकि तुम नेक बन जाओ**(63)

नोटः- यह क़िस्सा उस वक़्त हुआ जब तौरेत के हुक्मों को मुश्किल बता कर उन्होंने मानने से इनकार कर दिया था तो फ़रिशतों को हुक्म दिया कि तूर पहाड़ का एक बड़ा टुकड़ा उठा कर वो चट्टान उनके सरों के ऊपर लटका दो कि या तो मानो वर्ना अभी गिरा आख़िर मजबूर हो कर मानना पड़ा।

ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ بَعْدِ ذٰلِكَ ۚ فَلَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَ رَحْمَتُهٗ لَكُنْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَ لَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِيْنَ
اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِئِيْنَ ﴿٦٥﴾ ۚ فَجَعَلْنٰهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَ مَا خَلْفَهَا وَ
مَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٦٦﴾

आयत नं० 64 से 66

फिर तुम इस वादे के बाद भी (इससे) **फिर गये तो अगर तुम लोगों पर अल्लाह तआ़ला की महरबानी और रहमत न होती तो** (इस वादा तोड़ने की वजह से) **तुम** (फ़ौरन) **तबाह** (और हलाक) **हो जाते** (मगर हमारी महरबानी है कि उम्र पूरी होने तक मोहलत दे रक्खी है लेकिन कब तक? आख़िर मरने के बाद बुरे कारनामों के बदले पकड़े जाओगे)(64) **और तुम जानते ही हो उन लोगों का हाल जो तुम में से** (शरीअ़त की हद से) **बढ़ गये थे उस** (हुक्म) **में जो हफ़्ते के दिन के बारे में था** (कि उस दिन मच्छली का शिकार न करें मगर वो नहीं माने) **सो हमने उन को** (सूरत बिगड़ने का हुक्म देकर) **कह दिया कि तुम धुतकारे हुए बन्दर बन जाओ** (बस वो बन्दर बन गये)(65) **फिर हमने उसको एक सबक़ लेने वाला क़िससा बना दिया उन लोगों के लिए भी जो उस क़ौम के गुनाहगार थे और उन लोगों के लिए भी जो उन के बाद के ज़माने में आते रहे और** (ऐसे ही) **इस क़िस्से को नसीहत का सामान बना दिया अल्लाह से डरने वालों के लिए**(66)।

नोटः- एक ज़माने में यहूदियों पर मच्छली का शिकार हफ़्ते के दिन मना किया गया था और वो लोग समन्दर के किनारे आबाद थे और मच्छली के शिकार के शौक़ीन थे इसलिए वो शिकार से न माने तो उन पर अल्लाह का अज़ाब आया कि सूरतें बिगड़ गईं और बन्दर बन गये।

وَ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖۤ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تَذْبَحُوْا بَقَرَةً ؕ قَالُوْۤا اَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ؕ قَالَ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ
الْجٰهِلِيْنَ ﴿۶۷﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ؕ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا فَارِضٌ وَّ لَا بِكْرٌ ؕ عَوَانٌۢ بَيْنَ
ذٰلِكَ ؕ فَافْعَلُوْا مَا تُؤْمَرُوْنَ ﴿۶۸﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا لَوْنُهَا ؕ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَآءُ ۙ فَاقِعٌ
لَّوْنُهَا تَسُرُّ النّٰظِرِيْنَ ﴿۶۹﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ۙ اِنَّ الْبَقَرَ تَشٰبَهَ عَلَيْنَا ؕ وَ اِنَّاۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ
لَمُهْتَدُوْنَ ﴿۷۰﴾ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا ذَلُوْلٌ تُثِيْرُ الْاَرْضَ وَ لَا تَسْقِى الْحَرْثَ ۚ مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيْهَا ؕ
قَالُوا الْـٰٔنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ؕ فَذَبَحُوْهَا وَ مَا كَادُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿۷۱﴾

आयत नं० 67 से 71

और (वो वक़्त याद करो) **जब** (हज़रत) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह तआ़ला तुम को हुक्म देते हैं कि** (अगर इस लाश के क़ातिल का पता लगाना चाहते हो तो) **तुम एक बैल ज़बह करो, वो कहने लगे कि क्या आप हम से मज़ाक करते हैं** (यानी क़ातिल का पता लगाने के लिए जानवर के ज़बह करने का क्या जोड़ है), **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा अल्लाह की पनाह जो मैं ऐसा जाहिलों का सा काम करूं** (कि ख़ुदा के हुक्मों में मज़ाक़ करने लगूं)(67) **वो लोग कहने लगे कि आप पता कीजिए हमारे लिए अपने रब से कि हम से बयान कर दें कि वो** (बैल) **कैसा हो** (जिस को ज़बह करने का हुक्म दिया गया है), **आपने बताया कि वो** (यानी अल्लाह तआ़ला) **कहते हैं कि वो ऐसा बैल हो कि न बूढ़ा हो न बहुत बच्चा हो** (बल्कि) **दोनों उम्रों के बीच में** (यानी) **जवान** (पट्ठा) **हो, तो अब** (ज़्यादा बहस मत करो बल्कि) **कर डालो जो कुछ तुम को हुक्म मिला है**(68) (फिर) **कहने लगे कि** (अच्छा यह भी) **पूछ लीजिए हमारे लिए अपने रब से हम से यह भी बयान कर दें कि उस का रंग कैसा हो, आपने बताया** (इसके बारे में अल्लाह तआ़ला) **यह कहते हैं कि वो एक पीले रंग का बैल हो जिस का रंग तेज़ पीला हो कि देखने वालों को अच्छा लगता हो**(69) (फिर) **कहने लगे कि** (अब की बार और) **हमारे लिए अपने रब से पूछ दीजिए कि वो किस क़िस्म का हो क्योंकि हम को इस बैल में** (कुछ) **शक** (रह गया) **है** (कि वो कोई आ़म बैल होगा या अ़जीब क़िसम का), **और हम ज़रूर इन्शाल्लाह तआ़ला** (अब की बार) **ठीक समझ जाएंगे**(70) **मूसा** (अ़लैहिस्सलाम) **ने जवाब दिया कि अल्लाह तआ़ला यह कहते हैं कि वो** (कोई अ़जीब जानवर नहीं है यह आ़म बैल ही है मगर अच्छा होना चाहिए वो) **न तो हल में चला हो जिससे ज़मीन जोती जाए और न**

(कुंए में जोड़ा गया हो कि) **उससे खेत में पानी दिया जाए पूरी तरह से सालिम हो और उसमें कोई कमी न हो,** (यह सुन कर) **कहने लगे कि** (हां) **अब आपने पूरी** (और साफ़) **बात बताई,** (बस जानवर तलाश करके उस को ख़रीदा) **फिर उस को ज़बह** (तो) **कर दिया मगर देखने में करते हुए न लगते थे**(71)।

नोटः- हदीस शरीफ़ में है कि वो अगर इतनी बहसें न करते तो जो भी बैल ज़बह कर देते काफ़ी हो जाता। (मुआरिफुल क़ुरआन)

وَ اِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادّٰرَءْتُمْ فِيْهَا ؕ وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ۚ﴿۷۲﴾ فَقُلْنَا اضْرِبُوْهُ بِبَعْضِهَا ؕ كَذٰلِكَ يُحْيِ اللّٰهُ
الْمَوْتٰى ۙ وَ يُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۷۳﴾

आयत नं० 72 से 73

और जब तुम लोगों (में से किसी) **ने किसी आदमी का ख़ून कर दिया फिर** (अपनी जान बचाने के लिए) **एक दूसरे का नाम लेने लगे, और अल्लाह तआ़ला को यह बात खोलनी थी जिसको तुम** (में से मुजरिम लोग) **छुपाना चाहते थे**(72) **इसलिए हमने हुक्म दिया था कि** (बैल ज़बह करने के बाद) **उस** (लाश) **को उस बैल के कोई से टुकड़े से छुआ दो** (बस छुआने से वो ज़िन्दा हो गया और अपने क़ातिल का नाम बता दिया और फिर फ़ौरन मर गया), **इसी तरह अल्लाह तआ़ला** (क़ियामत में) **मुर्दों को ज़िन्दा कर देंगे और अल्लाह तआ़ला अपनी क़ुदरत के नमूने दिखाते हैं ताकि तुम समझ से काम लिया करो**(73)।

नोटः- ऊपर आयतों में उस क़िस्से का बयान है जब बनी इस्राईल में एक क़त्ल हो गया था और क़ातिल का पता नहीं चल रहा था तो उन लोगों की मांग पर अल्लाह तआ़ला के हुक्म से हज़रत मूसा ने यह तरीक़ा बताया था कि अल्लाह के नाम पर बैल ज़बह करके उसके हिस्से से लाश को छुआ दो तो वो ज़िन्दा हो कर अपने क़ातिल का नाम बता देगा फिर मर जाएगा बस ऐसा ही हुआ।

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوْبُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ فَهِىَ كَالْحِجَارَةِ اَوْ اَشَدُّ قَسْوَةً ؕ وَ اِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ
الْاَنْهٰرُ ؕ وَ اِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَآءُ ؕ وَ اِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ
عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۷۴﴾ اَفَتَطْمَعُوْنَ اَنْ يُّؤْمِنُوْا لَكُمْ وَ قَدْ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُوْنَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ يُحَرِّفُوْنَهٗ مِنْۢ

بَعْدِ مَا عَقَلُوْهُ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝٧٥

आयत नं० 74 से 75

ऐसे क़िस्सों के बाद (चाहिए था कि तुम्हारे दिलों में अल्लाह तआ़ला की बड़ाई समा जाती और नर्म हो जाते लेकिन) **तुम्हारे दिल फिर भी सख़्त ही रहे** (तो यह कहना चाहिए कि) **उन की मिसाल पत्थर की सी है** (या यह कहिए कि वो) **सख़्ती में उन से** (भी) **ज़्यादा** (हैं), **और** (ज़्यादा सख़्त इस वजह से कहा जाता है कि) **कुछ पत्थर तो ऐसे हैं जिन से बड़ी** (बड़ी-बड़ी) **नहरें फूट कर बहती हैं, और उन्हीं पत्थरों में कुछ ऐसे हैं कि जो फट जाते हैं फिर उनसे** (अगर ज़्यादा नहीं तो थोड़ा ही) **पानी निकल आता है, और पत्थरों में कुछ ऐसे हैं जो अल्लाह तआ़ला के डर से ऊपर से नीचे लुढ़क आते हैं** (और तुम्हारे दिल में किसी क़िस्म का असर ही नहीं होता), **और** (इस सख़्ती से जो बुरे काम करते हो) **अल्लाह तआ़ला तुम्हारे** (उन) **कामों से अन्जान नहीं हैं** (बहुत जल्द तुम को सज़ा को पहुंचा देंगे)(74) **क्या** (ऐ मुसलमानों ये सारे क़िस्से सुनकर) **अब भी तुम उम्मीद रखते हो कि ये** (यहूदी) **तुम्हारे कहने से ईमान ले आएंगे जब कि** (इन सब बातों से बढ़ कर एक और बात भी इन से हो चुकी है कि) **इन में कुछ लोग ऐसे हुए हैं कि अल्लाह तआ़ला का कलाम सुनते थे और फिर उस को** (बदल कर) **कुछ का कुछ कर देते थे** (और) **इस को समझने के बाद** (ऐसा करते) **और** (यह) **जानते थे** (कि हम बुरा काम कर रहे हैं)(75)।

नोटः- मतलब यह कि जो लोग ऐसे लालची और निडर हों वो किसी के कहने से कहां बात मानने वाले हैं।

وَ اِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚ وَ اِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ قَالُوْٓا اَتُحَدِّثُوْنَهُمْ بِمَا فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَآجُّوْكُمْ بِهٖ عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝٧٦

आयत नं० 76

और जब मिलते हैं (मुनाफ़िक़ यहूदी) **मुसलमानों से तो** (उन से तो) **कहते हैं कि हम** (भी) **ईमान ले आए हैं; और जब अकेले में होते हैं ये कुछ** (मुनाफ़िक़ यहूदी) **दूसरे कुछ** (आ़म) **यहूदियों के पास तो वो** (दूसरे यहूदी) **उनसे कहते हैं कि तुम** (यह) **क्या** (बेजा बात करते हो कि) **मुसलमानों को** (चापलूसी में) **वो बातें बता देते हो जो** (उनके मज़हब के फ़ाइदे की हैं जैसे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी होने की ख़बर और) **अल्लाह तआ़ला ने** (तौरेत में) **तुम पर खोलदी हैं** (मगर हम उन बातों को छुपाते हैं) **नतीजा यह होगा कि वो लोग बहस में तुम**

को हरा देंगे कि (देखो) **यह बात अल्लाह तआ़ला के पास** (से तुम्हारी किताब में आई) **है, क्या तुम** (इतनी मोटी सी बात भी) **नहीं समझते**(76)

नोटः- मुनाफ़िक़ लोग कभी-कभी अपने ईमान की सच्चाई जिताने को चापलूसी में मुसलमानों को कोई बात बता देते थे जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में या क़ुरआन के बारे में तौरेत में आई है तो उस पर दूसरे यहूदी उन को बुरा भला कहते थे।

اَوَ لَا يَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَ مَا يُعْلِنُوْنَ ﴿۷۷﴾ وَ مِنْهُمْ اُمِّيُّوْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ الْكِتٰبَ اِلَّآ اَمَانِيَّ وَ اِنْ
هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ﴿۷۸﴾ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ يَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ بِاَيْدِيْهِمْ ۗ ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ هٰذَا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ لِيَشْتَرُوْا بِهٖ
ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ فَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ اَيْدِيْهِمْ وَ وَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا يَكْسِبُوْنَ ﴿۷۹﴾

आयत नं० 77 से 79

क्या उन को इस (बात) **का पता नहीं है कि अल्लाह तआला सब जानते हैं उन चीज़ों को भी जिन को वो छुपाते हैं और उन चीज़ों को भी जिन को खोल देते हैं** (तो अगर मुनाफ़िक़ों ने अपना कुफ़्र छुपाया तो क्या और मुहम्द सललल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के नबी होने की ख़बर को छुपाया तो क्या अल्लाह तआ़ला को तो सब ख़बर है)(77) **और इन** (यहुदियों) **में बहुत से अनपढ़** (भी) **हैं जिन को किताब का इल्म नहीं लेकिन** (बेसनद) **मन बहलाने वाली बातें** (बहुत याद हैं) **और वो लोग कुछ और नहीं** (वैसी ही बेबुनियाद) **बातें घड़ लेते हैं**(78) (लेकिन बुराई की असल जड़ उन के आ़लिम ही हैं) **इस लिए बड़ी ख़राबी उन** (आ़लिमों) **की होगी जो लिखते हैं** (बदल सदल कर) **किताब** (तौरेत को) **अपने हाथों से,** (और) **फिर** (लोगों से) **कह देते हैं कि यह** (हुक्म) **अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से** (ऐसे ही आया) **है और मतलब** (सिर्फ़) **यह होता है कि इससे कुछ माल कमालें, तो बड़ी ख़राबी आएगी उन की इस** (किताब को बदलने) **की वजह से** (भी) **जिस को उन के हाथों ने लिखा था और बड़ी ख़राबी होगी उनको उस** (माल) **की वजह से** (भी) **जिस को उन्होंने कमाया था**(79)।

नोटः- लोगों को ख़ुश करने को ग़लत मसअले बताने से उन्हें कुछ आमदनी हो जाती थी इसी मतलब के लिए तौरेत में बदलाव किया करते थे।

وَ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدَةً ؕ قُلْ اَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللّٰهِ عَهْدًا فَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ عَهْدَهٗۤ اَمْ

تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٠﴾ بَلٰى مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَّ اَحَاطَتْ بِهٖ خَطِيْٓـَٔتُهٗ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ
فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٨١﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٨٢﴾

आयत नं० 80 से 82

और (यहूदी हज़रत मूसा को मानने की वजह से ख़ुद को मोमिन समझते थे इसलिए) **कहते थे कि हम को** (दोज़ख़ की) **आग हरगिज़ छुऐगी** (भी तो) **नहीं** (हां) **मगर बहुत थोड़े दिनों जो** (उंगलियों पर) **गिने जा सकें** (यानी गुनाहों की सज़ा भुगतने के बाद फिर ईमान की वजह से सदा के लिए जन्नत में जाएंगे), **आप** (ऐ पैग़म्बर उन से यह) **कह दीजिए क्या तुम लोगों ने अल्लाह तआला से** (इस के बारे में) **कोई वादा ले लिया है जिसमें अल्लाह तआला अपने वादे के ख़िलाफ़ न करेंगे या** (वादा नहीं लिया बल्कि वैसे ही) **अल्लाह तआला के ज़िम्मे ऐसी बात लगा रहे हो जिसका तुम्हें कुछ पता नहीं(80)** (और सिवाए कुछ दिनों के तुम को दोज़ख़ की आग) **क्यों नहीं** (लगेगी बल्कि सदा के लिए उसमें रहना ज़रूरी है क्योंकि हमारा क़ानून यह है कि) **जो आदमी जान बूझ कर बुरी बातें करता रहे और उस की बुराइयां** (उसको इस तरह) **घेर लें** (कि कहीं नेकी का असर तक न रहे) **तो ऐसे लोग** (काफ़िर होते हैं क्योंकि ईमान की नेकी भी उनके पास नहीं होती और ऐसे लोग) **दोज़ख़ में जाने वाले होते हैं, और वो उस में सदा** (सदा) **रहेंगे(81) और जो लोग** (अल्लाह व रसूल पर) **ईमान लाएं और नेक काम करें ऐसे लोग जन्नत** (में जाने) **वाले होते हैं** (और) **वो उसमें सदा** (सदा) **रहेंगे(82)।**

नोटः- चूंकि यहूदी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैग़म्बरी का इनकार करके काफ़िर हो गये इसलिए सदा सदा जहन्नम में रहना होगा उनका कुछ दिनों की सज़ा का दावा ग़लत है।

وَ اِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ لَا تَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ ۟ وَ بِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّ ذِي الْقُرْبٰى وَ الْيَتٰمٰى وَ
الْمَسٰكِيْنِ وَ قُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَّ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتُوا الزَّكٰوةَ ۗ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْكُمْ وَ اَنْتُمْ
مُّعْرِضُوْنَ ﴿٨٣﴾

आयत नं० 83

और (वो वक़्त याद करो) **जब हमने** (तौरेत में) **पक्का वादा लिया बनी इस्राईल से कि इबादत मत करना** (किसी की) **सिवाए अल्लाह के, और मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करना और रिश्तेदारों से भी और बे बाप के बच्चों से भी और ग़रीब मुहताजों से भी और आ़म लोगों से** (जब कोई) **बात कहना हो तो अच्छी तरह** (नर्मी से) **कहना** (मतलब यह कि नर्मी से नसीहत करना) **और नमाज़ की पाबन्दी रखना और ज़कात अदा करते रहना, फिर तुम** (वादा करके) **उससे फिर गये सिवाए कुछ लोगों के और तुम्हारी तो आदत है वादा करके फिर जाना**(83)

नोटः- इससे पता चला कि इस्लाम के यह हुक्म पहली शरीअ़तों में भी थे।

وَ اِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُوْنَ دِمَآءَكُمْ وَ لَا تُخْرِجُوْنَ اَنْفُسَكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ اَقْرَرْتُمْ وَ اَنْتُمْ
تَشْهَدُوْنَ ﴿٨٤﴾ ثُمَّ اَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ تَقْتُلُوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَ تُخْرِجُوْنَ فَرِيْقًا مِّنْكُمْ مِّنْ دِيَارِهِمْ ۫ تَظٰهَرُوْنَ عَلَيْهِمْ
بِالْاِثْمِ وَ الْعُدْوَانِ ؕ وَ اِنْ يَّاْتُوْكُمْ اُسٰرٰى تُفٰدُوْهُمْ وَ هُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ اِخْرَاجُهُمْ ؕ اَفَتُؤْمِنُوْنَ بِبَعْضِ
الْكِتٰبِ وَ تَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ ۚ فَمَا جَزَآءُ مَنْ يَّفْعَلُ ذٰلِكَ مِنْكُمْ اِلَّا خِزْيٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
يُرَدُّوْنَ اِلٰٓى اَشَدِّ الْعَذَابِ ؕ وَ مَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٨٥﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ۫
فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَ لَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٨٦﴾

आयत नं० 84 से 86

और (वो वक़्त याद करो) **जब हमने तुम से यह वादा** (भी) **लिया कि** (आपस में झगड़ा करके) **एक दूसरे का ख़ून मत करना और एक दूसरे को घर से मत निकालना** (यानी तंग करके घर से निकलने पर मजबूर मत करना) **फिर** (हमारे इस वादा लेने पर) **तुमने वादा भी कर लिया और वादा भी** (ऐसा) **जैसे तुम** (उस पर) **गवाही** (भी) **देते हो** (यानी पक्का वादा)(84) **फिर** (इस पक्के वादे के बाद) **तुम** (जैसे हो) **यह** (आंखों के सामने) **मौजूद** (ही) **हो कि आपस में** (एक दूसरे का) **ख़ून भी करते हो और एक दूसरे को घर छोड़ने पर मजबूर करते हो** (इस तरह कि) **इन अपनों के मुक़ाबले में** (इन की दुशमन क़ौमों की) **मदद करते हो गुनाह और ज़ुल्म के साथ** (सो इन दोनों हुक्मों की तो ऐसे बर्बाद किया), **और** (एक तीसरा हुक्म जो आसान समझा उस पर अ़मल करने को तैयार रहते हो कि) **अगर उन लोगों में से कोई** (दुशमन का) **क़ैदी होकर तुम तक पहुंच जाता है तो ऐसो को कुछ बदला देकर छुड़ा लेते हो जब कि यह बात** (भी जानते

हो) **कि तुम को उन का घर से निकाल देना भी हराम है** (और क़त्ल तो और भी ज़्यादा गुनाह है), **क्या तो** (बस यह कहिए कि तौरेत) **किताब के कुछ** (हुक्मों) **पर तो तुम ईमान रखते हो और कुछ** (हुक्मों) **पर ईमान नहीं रखते तो और क्या सज़ा हो** (ना चाहिए) **ऐसे आदमी की जो तुम लोगों मे से ऐसी हरकत करे सिवाए रूसवाई के दुनिया की ज़िन्दगी में** (जैसा कि दुनिया में ऐसी ही सज़ाएं मिली कि रूसवा भी हुए) **और क़ियामत के दिन** (तो बड़ा) **सख़्त अ़ज़ाब दिया जाएगा, और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे** (बुरे) **कामों से अन्जान नहीं हैं**(85) (और उनकी सज़ा की वजह यह है कि) **ये वो लोग हैं कि इन्होंने** (हुक्मों को न मानकर) **दुनिया की ज़िन्दगी** (के मज़ों) **को ले लिया है आख़रत** (की बख़्शिश) **के बदले** (में), **इसलिए न तो** (सज़ा देने वाले की तरफ़ से) **उन की सज़ा में** (कुछ) **कमी की जाएगी और न कोई** (यार रिश्तेदार) **उनकी मदद कर पाएगा**(86)।

وَ لَقَدْ اٰتَیْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَ قَفَّیْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ بِالرُّسُلِ٘ وَ اٰتَیْنَا عِیْسَى ابْنَ مَرْیَمَ الْبَیِّنٰتِ وَ اَیَّدْنٰهُ بِرُوْحِ
الْقُدُسِؕ اَفَكُلَّمَا جَآءَكُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰۤى اَنْفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْۚ فَفَرِیْقًا كَذَّبْتُمْ٘ وَ فَرِیْقًا تَقْتُلُوْنَ ﴿۸۷﴾

आयत नं० 87

और हमने (ऐ बनी इस्राईल तुम्हारी हिदायत के लिए सदा से बड़े से बड़े सामान किये सब से पहले) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को** (तौरेत) **किताब दी और** (फिर) **उनके बाद** (बीच में) **एक के बाद एक** (बराबर बहुत से) **पैग़म्बरों को भेजते रहे, और** (फिर उस ख़ानदान की कड़ी के आख़ीर में) **हमने मरयम के बेटे ईसा** (अ़लैहिस्सलाम) **को** (पैग़म्बरी की) **खुली निशानियां** (इन्जील और मोजिज़े) **दिये और हमने उन को रूहुल क़ुदुस** (यानी जिब्रील अलैहिस्सलाम) **से** (जो) **मदद दी** (सो अलग जो अपने आप में एक खुली दलील थी, तो) **क्या** (अचम्भे की बात नहीं कि इस पर भी तुम बग़ावत करते रहे और) **जब कभी** (भी) **कोई पैग़म्बर तुम्हारे पास ऐसे हुक्म लाए जिन को तुम्हारा दिल न चाहता था** (जब ही) **तुमने** (उन पैग़म्बरों की बात न मानी और) **घमन्ड किया तो** (उन पैग़म्बरों में से) **कुछ को तो** (अल्लाह की पनाह) **तुमने झूटा बताया और कुछ को** (बेधड़क) **क़त्ल ही कर दिया**(87)।

नोटः- चूंकि यहूदी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के पक्के दुशमन थे इसलिए जिब्रील अ़लैहिस्सलाम उन की हिफ़ाज़त के लिए साथ रहते थे यहां तक कि आख़ीर में उन्हीं के वास्ते से ईसा अ़लैहिस्सलाम

आसमान पर उठवा लिए गये थे।

وَ قَالُوْا قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيْلًا مَّا يُؤْمِنُوْنَ ۝۸۸ وَ لَمَّا جَآءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ
مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ ۙ وَ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚۖ فَلَمَّا جَآءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ ؗ
فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝۸۹

आयत नं० 88 से 89

और वो (यहूदी घमन्ड से) **कहते हैं कि हमारे दिल** (हिफ़ाज़त के) **पर्दे में** (हैं कि उसमें दूसरे मज़हब यानी इस्लाम का असर नहीं होता यानी मज़हब पर हम पक्के) **हैं,** (अल्लाह तआ़ला बताते हैं कि यह मज़बूती नहीं है) **बल्कि उन के कुफ़्र की वजह से उन पर अल्लाह की मार है** (कि इस्लाम जो सच्चा दीन है उससे भागते हैं और जो दीन बदला जा चुका उस पर जमे हैं) **इसलिए वो कम ही ईमान लाते हैं**(88) **और जब इनके पास** (एक) **ऐसी किताब पहुंची** (यानी कुरआन) **जो अल्लाह की तरफ़ से है** (और) **उस** (किताब) **की** (भी) **तसदीक़ करने वाली है जो** (पहले से) **इनके पास है** (यानी तौरेत) **और जब कि इससे पहले** (ख़ुद) **कहते थे काफ़िरों से** (यानी अरब के मुशरिकों से कि एक नबी आने वाले हैं और एक किताब लाने वाले हैं मगर) **फिर जब वो चीज़ आ पहुंची जिसको वो** (अच्छी तरह) **जानते पहचानते हैं तो इसका** (साफ़) **इनकार कर बैठे, तो** (बस) **अल्लाह की मार हो ऐसे इनकार करने वालों पर** (कि जो जान बूझ कर सिर्फ़ ज़िद की वजह से इनकार करते हैं)**(89)।**

नोटः- तौरेत में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पैग़म्बर होने की और कुरआन शरीफ़ के नाज़िल होने की ख़बर मौजूद थी इस लिए जो कुरआन और रसूल का इनकार करेगा वो तौरेत पर भी ईमान नहीं रखता।

بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖۤ اَنْفُسَهُمْ اَنْ يَّكْفُرُوْا بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ بَغْيًا اَنْ يُّنَزِّلَ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ
فَبَآءُوْ بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ ؕ وَ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝۹۰ وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا نُؤْمِنُ بِمَاۤ
اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَ يَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَآءَهٗ ۗ وَ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ؕ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُوْنَ اَنْۢبِيَآءَ اللّٰهِ مِنْ قَبْلُ اِنْ
كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝۹۱ وَ لَقَدْ جَآءَكُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَ اَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ۝۹۲

आयत नं० 90 से 92

वो हालत (बहुत ही) **बुरी है जिस को अपना कर** (वो अपनी सोच में) **अपनी जानों को** (आख़रत की सज़ा से) **छुड़ाना चाहते हैं** (और वो हालत यह है) **कि कुफ़्र** (यानी इनकार) **करते हैं ऐसी चीज़ का जो अल्लाह तआ़ला ने** (एक सच्चे पैग़म्बर पर) **उतारी है** (यानी क़ुरआन और इनकार भी) **सिर्फ़** (इस) **ज़िद पर कि अल्लाह तआ़ला अपनी महरबानी जिस बन्दे पर चाहे** (यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर क्यों) **कर दे** (यानी उन को क्यों नबी बनाया) **तो** (इस जलने और कुफ़्र की वजह से) **उन लोगों ने** (अल्लाह तआ़ला का) **ग़ुस्से पर ग़ुस्सा कमा लिया** (एक ग़ुस्सा कुफ़्र पर दूसरा ग़ुस्सा जलने पर)**, और** (आख़रत में) **उन कुफ़्र करने वालों को ऐसी सज़ा होगी जिसमें** (तकलीफ़ के साथ-साथ) **रूसवाई** (भी) **है** (और गुनाहगार मोमिन को सज़ा पाक करने के लिए होगी उसमें रूसवाई नहीं होगी)**(90) और जब इन** (यहूदियों) **से कहा जाता है कि तुम ईमान लाओ उन सभी किताबों पर जो अल्लाह तआ़ला ने** (बहुत से पैग़म्बरों पर) **उतारी हैं** (और उन सभी किताबों में क़ुरान भी हैं) **तो** (जवाब में) **कहते हैं कि हम** (तो सिर्फ़) **उस** (ही) **किताब पर ईमान लाएंगे जो हम** (लोगों) **पर** (हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के वास्ते से) **उतारी गई है** (यानी तौरेत) **और** (बाक़ी) **जितनी** (किताबें) **इसके सिवा हैं** (जैसे इन्जील और क़ुरआन) **उन** (सबका) **वो इनकार करते हैं जब कि** (तौरेत के सिवा) **वो** (दूसरी किताबें) **भी सच्ची हैं और** (सच्ची होने के साथ) **तसदीक़ करने वाली हैं उस** (किताब) **की जो उन के पास है** (यानी तौरेत की)**, आप** (यह भी) **कह दीजिए कि** (अच्छा तो) **फिर क्यों क़त्ल किया करते थे अल्लाह के पैग़म्बरों को इसके पहले ज़माने में अगर तुम** (तौरेत पर) **ईमान रखने वाले थे** (जबकि वो पैग़म्बर भी तौरेत की तसदीक़ करने वाले थे तो उनके नाहक़ क़त्ल के बाद तौरेत पर भी ईमान कहां रहा)(91) **और** (हज़रत) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **तुम लोगों के पास साफ़ निशानियां** (तौहीद व पैग़म्बरी की) **लाए** (मगर) **इस पर भी तुम लोगों ने यह सितम ढाया कि बछड़े को** (माबूद) **बना लिया** (और उसकी पूजा करने लगे) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **के** (तूर पर जाने के) **बाद(92)।**

नोटः- तौहीद का मतलब है अल्लाह को एक मानना (ऐकेश्वरवाद)।
माबूद जिस की इबादत की जाए (पूजनीय) ख़ुदा।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ ۖ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَاسْمَعُوا ۖ قَالُوا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَ
أُشْرِبُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ۚ قُلْ بِئْسَمَا يَأْمُرُكُمْ بِهِ إِيمَانُكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٩٣﴾

आयत नं० 93

और (वो वक़्त याद करो) **जब हमने तुम से वादा लिया था** (और वादा लेने के लिए) **तूर** (पहाड़) **को तुम्हारे** (सरों के) **ऊपर ला खड़ा किया था,** (और उस वक़्त हुक्म दिया था कि) **लो जो कुछ** (हुक्म) **हम तुम को देते हैं हिम्मत** (और मज़बूती) **के साथ लेलो और** (इन हुक्मों को दिल से) **सुनो,** (उस वक़्त) **उन्होंने** (डर के मारे ज़बान से तो) **कह दिया कि हमने** (मान लिया और) **सुन लिया और** (चूंकि यह बात दिल से न थी इसलिए ऐसा लगता था जैसे कह रहे हों) **हम से अ़मल न होगा, और** (वजह उस की यह थी कि) **उन के दिलों** (की रग-रग) **में वो बछड़ा ही समा गया था उनके** (पिछले) **कुफ़्र की वजह से** (जबकि उन्होंने एक बुत पूजने वाली क़ौम को देख कर कहा था कि हमारे लिए कोई ऐसा ही बुत बना दीजिए), **आप कह दीजिए कि** (देख लिया तुम ने अपने ईमान की हालत को सो) **ये काम तो बहुत बुरे हैं जो तुम्हारा ईमान तुम को सिखा रहा है अगर तुम** (अपने आप में ख़ुद को अब भी) **ईमान वाले** (समझते) **हो** (यानी यह ईमान नहीं है)(93)।

قُلْ إِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْآخِرَةُ عِنْدَ اللَّهِ خَالِصَةً مِنْ دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٩٤﴾ وَ
لَنْ يَتَمَنَّوْهُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ﴿٩٥﴾ وَلَتَجِدَنَّهُمْ أَحْرَصَ النَّاسِ عَلَىٰ حَيَاةٍ ۚ وَ
مِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا ۚ يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ أَلْفَ سَنَةٍ ۚ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهِ مِنَ الْعَذَابِ أَنْ يُعَمَّرَ ۗ وَاللَّهُ
بَصِيرٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾

आयत नं० 94 से 96

नोटः- कुछ यहूदी यह दावा करते थे कि आख़रत की नेमतें सिर्फ़ हमारा ही हक़ हैं अल्लाह तआ़ला ने इस दावे को झूटा साबित करने के लिए फ़रमाया-

(ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **आप** (इन लोगों से) **कह दीजिए कि अगर** (तुम्हारे कहने के हिसाब से) **आख़रत का घर सिर्फ़ तुम्हारे ही वास्ते है कि जिसमें दूसरे का हिस्सा नहीं तो तुम** (इस को साबित करने के लिए ज़रा) **मौत की तमन्ना करके दिखादो अगर तुम** (इस दावे में) **सच्चे हो(94) और** (हम साथ ही यह भी कह देते हैं कि) **ये लोग कभी इस** (मौत) **की तमन्ना न करेंगे उन** (कुफ़्र के) **कामों की** (सज़ा के डर की) **वजह से जो अपने हाथों समेटते हैं, और**

अल्लाह तआला को सब ख़बर है इन ज़ालिमों (के हाल) **की** (जब मुक़दमे की तारीख़ आएगी यानी क़ियामत का दिन तो सज़ा का हुक्म कर दिया जाएगा)(95) **और** (वो लोग मौत की तमन्ना कैसे करते) **आप** (तो) **उनको** (दुनिया की) **ज़िन्दगी का लालची दूसरे** (आम) **लोगों से** (भी) **बढ़कर पाएंगे और** (दूसरों की तो बात क्या बल्कि कुछ) **मुशरिकों से भी** (बढ़ कर आप उन को ज़िन्दगी का लालची देखेंगे और उनकी यह हालत है कि) **उनमें का एक-एक** (आदमी) **इस हवस में है कि उस की उम्र एक हज़ार साल की हो जाए, और** (भला मान लो इतनी उम्र हो भी गई तो क्या) **यह बात अज़ाब से तो बचा नहीं सकती कि** (किसी की बड़ी) **उम्र हो जाए, और अल्लाह तआला उनके सब** (बुरे) **कामों को देखते हैं** (जिन पर उनको अ़ज़ाब होने वाला है)(96)।

नोटः- यहूदी इस बात को जानते थे कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सच्चे पैग़म्बर हैं और आप का दीन सच्चा दीन है इसलिए किसी की हिम्मत नहीं हुई कि कुरआन के दावे पर मौत की तमन्ना करके दिखाए क्योंकि अपना अन्जाम जानते थे। और इस्लाम की सच्चाई के सबूत के लिए यह क़िस्सा काफ़ी है।

قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَإِنَّهٗ نَزَّلَهٗ عَلٰى قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللّٰهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَّبُشْرٰى
لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٧﴾ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ وَمِيْكٰلَ فَإِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٩٨﴾

आयत नं० 97 से 98

नोटः- कुछ यहूदियों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह सुन कर कि जिब्रील अ़लैहिस्सलाम वही लाते हैं यह कहा कि उन से तो हमारी दुशमनी है हमारी क़ौम पर सख़्त हुक्म उन्हीं के वास्ते से आते रहे हैं। मीकाइल अच्छे हैं कि बारिश का काम उनके ज़िम्मे है अगर वो वही लाया करते तो हम मान लेते इस पर अल्लाह तआला जवाब देते हैं।

(ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) **आप** (इनसे) **कह दीजिए कि जो जिब्रील से दुशमनी रक्खे** (वो जाने लेकिन इस बात को कुरआन के न मानने से क्या वास्ता क्योंकि वो तो सिर्फ़ लाने वाले हैं) **सो उन्होंने यह कुरआन पाक अल्लाह के हुक्म से आप के दिल तक पहुंचा दिया है** (तो लाने वाले को क्या कुरआन को देखो कि कैसा है तो) **उसकी** (ख़ुद) **यह हालत है कि तसदीक़**

कर रहा है अपने से पहले वाली (आसमानी) **किताबों की और रास्ता बता रहा है और ईमान वालों को ख़ुशख़बरी सुना रहा** (है और आसमानी किताबों की येही शान होती है बस क़ुरआन हर हाल में आसमानी किताब है जिस को मानना ज़रूरी है फिर जिब्रील अ़लैहिस्सलाम की दुशमनी से इस को न मानना बेवक़ूफ़ी) **है(97)** (अब रही बात जिब्रील अ़लैहिस्सलाम से दुशमनी की तो उस का क़ानून यह है कि) **जो** (कोई) **आदमी दुशमन हो अल्लाह तआ़ला का और फ़रिशतों का और पैग़म्बरों का और जिब्रील का और मीकाइल का तो** (इन सब का वबाल यह है कि) **अल्लाह तआ़ला दुशमन है ऐसे काफ़िरों का(98)।**

नोटः- 'वही' अल्लाह तआ़ला का पैग़ाम है जो फ़रिशते के वास्ते से नबी तक पहुंचता है।

وَ لَقَدْ اَنْزَلْنَاۤ اِلَیْكَ اٰیٰتٍۭ بَیِّنٰتٍ ۚ وَ مَا یَكْفُرُ بِهَاۤ اِلَّا الْفٰسِقُوْنَ ﴿۹۹﴾

आयत नं० 99

नोटः- और कुछ यहूदियों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा था कि आप पर कोई ऐसी साफ़ निशानी नहीं उतरी जिस को हम भी जानते पहचानते इसके जवाब में कहा जाता है कि वो तो एक ही निशानी के लिए फिरते हैं।

हम ने तो आप के पास बहुत सी साफ़ निशानियां उतारीं हैं (जिन को वो भी अच्छी तरह जानते पहचानते हैं तो उनका इनकार न जानने की वजह से नहीं बल्कि यह इनकार हुक्म न मानने की आ़दत की वजह से है) **और कोई इनकार नहीं किया करता** (ऐसी निशानियों का) **मगर सिर्फ़ वो लोग जो हुक्म न मानने के आ़दी हैं(99)।**

اَوَ كُلَّمَا عٰهَدُوْا عَهْدًا نَّبَذَهٗ فَرِیْقٌ مِّنْهُمْ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا یُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۰۰﴾ وَ لَمَّا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ
مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِیْقٌ مِّنَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ ۙۗ كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ كَاَنَّهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۱﴾ وَ
اتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا الشَّیٰطِیْنُ عَلٰى مُلْكِ سُلَیْمٰنَ ۚ وَ مَا كَفَرَ سُلَیْمٰنُ وَ لٰكِنَّ الشَّیٰطِیْنَ كَفَرُوْا یُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ
السِّحْرَ ۗ وَ مَاۤ اُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَیْنِ بِبَابِلَ هَارُوْتَ وَ مَارُوْتَ ؕ وَ مَا یُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ حَتّٰى یَقُوْلَاۤ اِنَّمَا نَحْنُ
فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ؕ فَیَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمَا مَا یُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَیْنَ الْمَرْءِ وَ زَوْجِهٖ ؕ وَ مَا هُمْ بِضَآرِّیْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ

إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَيَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنفَعُهُمْ ۚ وَلَقَدْ عَلِمُوا لَمَنِ اشْتَرَاهُ مَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ
خَلَاقٍ ۚ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهِ أَنفُسَهُمْ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿١٠٢﴾ وَلَوْ أَنَّهُمْ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَمَثُوبَةٌ مِّنْ عِندِ اللَّهِ
خَيْرٌ ۖ لَّوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿١٠٣﴾

आयत नं० 100 से 103

नोटः- कुछ यहूदियों को जो वो वादा याद दिलाया गया जो उन से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने के बारे में तौरेत में लिया गया था तो उन्होंने ख़ुद वादा लेने ही से साफ़ इनकार कर दिया उस के बारे में कहा जाता है कि-

क्या (उस वादा लेने से उन को इनकार है) **और** (उन की तो यह हालत है कि उन्होंने अपने पक्के वादों को भी कभी पूरा नहीं किया बल्कि) **जब कभी उन लोगों ने** (दीन के बारे में) **कोई वादा किया होगा** (ज़रूर) **उसको उनमें से कुछ लोगों ने छोड़ दिया होगा, बल्कि उन** (वादा पूरा न करने वालों) **में ज़्यादा तो ऐसे ही निकलेंगे जो** (सिरे से) **वादे का यक़ीन ही नहीं रखते** (सो पूरा न करना तो बड़ा गुनाह था ही यह यक़ीन न करना उससे बढ़ कर कुफ़्र है)(100) **और जब उनके पास एक** (बड़ी शान के) **पैग़म्बर आए अल्लाह तआला की तरफ़ से जो** (रसूल होने के साथ) **तसदीक़ भी कर रहे हैं उस किताब की जो उन लोगों के पास है** (यानी तौरेत क्योंकि उसमें आप के नबी होने की ख़बर है तो इस हालत में आप पर ईमान लाना तौरेत के हुक्म पर चलना था जिस को वो भी अल्लाह की किताब जानते हैं मगर बावजूद इसके भी) **इन किताब वालों में के कुछ लोगों ने ख़ुद अल्लाह की उस किताब ही को इस तरह पीछे डाल दिया है जैसे उन को** (इसके अल्लाह की किताब होने का) **पता ही नहीं**(101) **और** (यहूदी ऐसे बेसमझ हैं कि उन्होंने अल्लाह की किताब को तो छोड़ दिया और) **ऐसी चीज़** (यानी जादू मन्त्र) **के पीछे हो लिए जिसका चर्चा किया करते थे शैतान** (यानी ख़बीस जिन्नात) **सुलेमान** (अ़लैहिस्सलाम) **की हुकूमत** (के ज़माने) **में और** (कुछ बेवकूफ़ जो हज़रत सुलेमान अ़लैहिस्सलाम पर जादू का शक रखते हैं बिल्कुल बकवास है क्योंकि जादू तो कुफ़्र है और) **सुलेमान** (अ़लैहिस्सलाम) **ने** (अल्लाह की पनाह कभी) **कुफ़्र नहीं किया** (जादू अलग चीज़ है और मोजिज़े व करामतें अलग चीज़ हैं हां) **शैतान** (बेशक) **कुफ़्र** (की बातें और काम यानी जादू) **किया करते थे और हालत यह थी कि** (ख़ुद तो करते ही दूसरे) **लोगों को भी** (ये) **जादू सिखाया करते थे** (तो वो जादू नस्ल दर नस्ल चला आ रहा है जिस पर ये यहूदी चल रहे

हैं), **और** (इसी तरह) **उस** (जादू) **को भी** (ये लोग अपनाए हुए हैं) **जो कि उन दोनों फ़रिशतों पर** (एक ख़ास वजह से) **उतारा गया था** (जो शहर) **बाबुल में** (रहते थे) **जिन का नाम हारूत व मारूत था, और वो दोनो** (वो जादू) **किसी को न बताते थे जब तक** (पहले) **यह** (न) **कह देते कि हमारा वजूद भी** (लोगों के लिए अल्लाह तआ़ला का) **एक इम्तिहान है** (कि हमारी ज़बान से जादू की बात सुन कर कौन फ़ंसता है और कौन बचता है) **तो तुम** (इसमें फ़ंसकर) **कहीं काफ़िर मत बन जाना, तो** (कुछ) **लोग इन दोनों** (फ़रिशतों) **से इस तरह का जादू सीख लेते थे जिस से** (अ़मल करके) **किसी मर्द और उसकी बीवी में फूट डाल देते थे, और** (इस से कोई डरे नहीं या वहम न करे कि जादूगर जो चाहे कर सकता है क्योंकि यह पक्की बात है कि) **ये** (जादूगर) **लोग इस** (जादू) **से किसी को** (ज़रा सा भी) **नुक़सान नहीं पहुंचा सकते मगर अल्लाह ही के हुक्म से, और** (ऐसा जादू सीख कर बस) **ऐसी चीज़ें सीख लेते हैं जो** (ख़ुद) **उन को** (गुनाह की वजह से) **नुक़सान देने वाली हैं और** (असल में) **उन को नफ़ा देने वाली नहीं, और** (यह बात कुछ हमारे ही कहने की नहीं बल्कि) **ज़रूर ये** (यहूदी) **भी इतना जानते हैं कि जो आदमी इस** (जादू) **को** (अल्लह की किताब के बदले में) **अपनाए ऐसे आदमी का आख़रत में कोई हिस्सा** (बाक़ी) **नहीं, और बेशक बुरी है वो चीज़** (यानी जादू व कुफ़्र) **जिसमें वो लोग अपनी जान दे रहे हैं, काश उन को** (इतनी) **समझ होती(102) और अगर वो लोग** (इस कुफ़्र और बुरे कामों की जगह) **ईमान लाते और नेकी के काम करते तो अल्लाह तआ़ला के यहां का बदला** (इस कुफ़्र और बुरे कामों से हज़ार दर्जे) **बेहतर था, काश** (उन को इतनी) **समझ होती(103)**

नोटः- एक ज़माने में शहर बाबुल में जादू का बड़ा चर्चा था तो अल्लाह तआ़ला ने हारूत व मारूत नाम के दो फ़रिशतों को इन्सानी शकल में भेजा जो लोगों को जादू सिखाते थे ताकि लोगों को जादू और मोजिज़े का फ़र्क़ मालूम हो जाए कि जादू तो हम ख़ुद भी कर सकते हैं और मोजिज़ा अल्लाह की तरफ़ से है जो पैग़म्बरी की निशानी है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَ قُوْلُوا انْظُرْنَا وَ اسْمَعُوْا ؕ وَ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝۱۰۴

आयत नं० 104

नोटः- कुछ यहूदियों ने एक चालाकी यह की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आकर राइना बोलते जिस का मतलब अबरानी ज़बान में एक बददुआ़ है और वो इसी नीयत से कहते

थे मगर अरबी ज़बान में इसका मतलब है हमारी तरफ़ ध्यान कीजिए और इस अच्छे मतलब के इरादे से कुछ मुसलमान भी ऐसा कहने लगे इस पर वो यहूदी आपस में हंसते थे अल्लाह तआ़ला ने इस बात को साफ़ करते हुए मुसलमानों को हुक्म दिया कि-

ऐ ईमान वालो तुम राइना मत कहा करो और (इस की जगह) **उन्ज़ुरना कह दिया करो** (क्योंकि उन्ज़ुरना का मतलब और राइना का मतलब अरबी ज़बान में एक ही है और राइना कहने से यहूदियों की चाल है इसलिए इस को छोड़ कर उन्ज़ुरना बोलो) **और** (इस हुक्म को अच्छी तरह) **सुन लो** (और याद रक्खो), **और** (इन) **काफ़िरों को तो दर्दनाक सज़ा होनी** (ही) **है** (जो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शान में चालाकी के साथ ऐसी बेअदबी करते हैं)**(104)**

مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَ لَا الْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ خَيْرٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝۱۰۵

आयत नं० 105

नोटः- कुछ यहूदी कुछ मुसलमानों से कहने लगे कि हम दिल से तुम्हारा भला चाहने वाले हैं अगर तुम्हारे दीन के हुक्म हमारे दीन के हुक्मों से अच्छे होते तो हम भी मान लेते इस पर अल्लाह तआ़ला उनको झूटा बताते हुए कहते हैं-

ज़रा भी पसन्द नहीं करते काफ़िर लोग (चाहे) **इन किताब वालों मे से** (हों) **और** (चाहे) **मुशरिकों में से इस बात को कि तुम को तुम्हारे रब की तरफ़ से किसी तरह की** (भी) **भलाई नसीब हो, और** (उनके जलने से कुछ भी नहीं होता क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत** (व महरबानी) **के साथ जिस को चाहे चुन लेते हैं, और अल्लाह तआ़ला बड़े महरबान हैं** (बस उन्होंने अपनी महरबानी से मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अपना रसूल चुन लिया है जलने वाले जलते रहें)**(105)**

مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَآ اَوْ مِثْلِهَا ؕ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝۱۰۶ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝۱۰۷

आयत नं० 106 से 107

नोटः- जब क़िबला बदलने का हुक्म आया यानी बैतुलमुक़द्दस को बदल कर ख़ाना काबा को क़िबला

बनाया गया तो यहूदियों ने उस पर ऐतराज़ किया और मुशरिक भी कुछ हुक्मों के बदलने पर तानाकशी करते थे अल्लाह तआ़ला उनके ताना कशी और ऐतराज़ का जवाब देते हैं।

हम किसी आयत का जो हुक्म बदल देते हैं (चाहे क़ुरआन की आयत याद रहे) **या उस आयत** (ही) **को भुला देते हैं तो** (यह कोई ऐतराज़ की बात नहीं क्योंकि इसकी भी कोई वजह होती है जैसे) **हम उस आयत से बेहतर या उस आयत ही के बराबर** (बजाए उसके दूसरी चीज़) **ले आते हैं,** (ऐ ऐतराज़ करने वाले) **क्या तुझको यह पता नहीं कि अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर क़ुदरत रखते हैं**(106) (और) **क्या तुझको यह पता नहीं कि अल्लाह तआ़ला ऐसे हैं कि ख़ास उन्हीं की हुकूमत आसमानो और ज़मीन पर** (है जब उन की इस क़ुदरत व हुकूमत में कोई दूसरा साझी नहीं तो ज़रूरत देखते हुए दूसरा हुक्म देने में कौन रूकावट डाल सकता) **है, और** (यह भी समझ लो कि) **तुम्हारा अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई यार व मददगार भी नहीं** (बस जब वो हमदर्द हैं तो जो हुक्म देंगे उसमें ही भलाई होगी और जब मददगार हैं तो उन हुक्मों पर चलने के वक़्त मदद और मुख़ालिफ़ों से हिफ़ाज़त भी करेंगे)(107)।

اَمْ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَسْـَٔلُوْا رَسُوْلَكُمْ كَمَا سُئِلَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ؕ وَمَنْ يَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ۝١٠٨

आयत नं० 108

नोटः- कुछ यहूदियों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से दुशमनी में कहा कि जिस तरह मूसा अ़लैहिस्सलाम पर तौरत एक बार में उतारी गई इसी तरह आप क़ुरआन इकट्ठा लाइऐ इस पर जवाब दिया जाता है कि-

हां क्या तुम यह चाहते हो कि अपने (वक़्त के) **रसूल से** (ऐसे बेतुके) **सवाल करो जैसा कि इसके पहले** (तुम्हारे बड़ों की तरफ़ से हज़रत) **मूसा** (अ़लैहिस्सलाम) **से भी** (ऐसे-ऐसे) **सवाल किये जा चुके** (हैं जैसे अल्लाह तआ़ला को दुनिया में देखने की मांग करना, और जिन मांगों से सिर्फ़ पैग़म्बर पर ऐतराज़ करने का ही इरादा हो और ईमान लाने का फिर भी इरादा न हो ये सिर्फ़ कुफ़्र की बातें) **हैं, और जो आदमी ईमान लाने की बजाए कुफ़्र** (की बातें) **करे बेशक वो आदमी सीधे रास्ते से भटक गया**(108)।

وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا ۚ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا
تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ فَاعْفُوْا وَاصْفَحُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٠٩﴾ وَ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَ
اٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿١١٠﴾

आयत नं० 109 से 110

नोटः- कुछ यहूदी रात दिन इस कोशिश में रहते थे कि किसी तरह मुसलमानों को उन के दीन से फेर दें और इसके लिए ख़ुद को हमदर्द जिताते थे। और नाकाम होने के बावजूद भी अपनी धुन में लगे रहते थे अल्लाह तआला ने मुसलमानों को इससे होशियार रहने की नसीहत की, कि-

इन किताब वालों (यानी यहूदियों) **में से बहुत से दिल यह चाहते हैं कि तुम को तुम्हारे ईमान लाने के बाद फिर काफ़िर कर डालें** (और ये चाहना कुछ भला चाहने की वजह से नहीं जैसा कि वो दिखाते हैं बल्कि) **सिर्फ़** (तुमसे) **जलने की वजह से** (है) **जो कि** (तुम्हारी तरफ़ से किसी बात की वजह से नहीं बल्कि) **ख़ुद उनके दिलों से ही** (जोश मारता है और यह भी नहीं कि उन को सच्चाई का पता न हुआ हो बल्कि) **सच जानने के बाद** (यह हालत) **है,** (अब इस पर मुसलमानों को उन पर गुस्सा आ सकता था इसलिए कहा कि) **अच्छा** (अब तो) **मुआफ़ करो और जाने दो जब तक अल्लाह तआला** (इस बारे में) **अपना** (नया) **हुक्म भेजें** (इशारा कर दिया गया कि उन को तुम्हारे हाथों सज़ा दिलाई जाएगी, और किसी को मुसलमानों की कमज़ोर हालत देख कर अचम्भा हो सकता था इसलिए कहा कि) **अल्लाह तआला हर चीज़ की क़ुदरत रखते हैं** (चाहे वो छोटी हो या अ़जीब हो)(109) **और** (अभी तो बस) **नमाज़ें पाबन्दी से पढ़ते जाओ और** (जिन पर ज़कात फ़र्ज़ है) **ज़कात देते जाओ** (और जब वो क़ानून आएगा इन नेक कामों के साथ उस को भी बढ़ा लेना), **और** (यह न समझो कि जब तक जिहाद का हुक्म न आए सिर्फ़ नमाज़ रोज़े से कुछ सवाब में कमी रहेगी, नहीं बल्कि) **जो नेक काम भी अपनी भलाई के वास्ते जमा करते रहोगे अल्लाह तआला के पास** (पहुंच कर) **उसको** (बदले के साथ पूरा-पूरा) **पालोगे, क्योंकि अल्लाह तआला तुम्हारे सब किये हुए कामों को देखभाल रहे हैं** (उनमें कुछ भी बर्बाद न होने पाएगा)(110)।

नोटः- बुराई को रोकने के लिए कोशिश करना 'जिहाद' कहलाता है।

وَ قَالُوْا لَنْ يَّدْخُلَ الْجَنَّةَ اِلَّا مَنْ كَانَ هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ؕ تِلْكَ اَمَانِيُّهُمْ ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ﴿۱۱۱﴾ بَلٰى ۗ مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَ هُوَ مُحْسِنٌ فَلَهٗۤ اَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۠ وَ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَ لَا هُمْ
يَحْزَنُوْنَ ﴿۱۱۲﴾

आयत नं० 111 से 112

और (यहूदी व ईसाई यह) **कहते हैं कि जन्नत में कोई भी न जाने पाएगा सिवाए उन लोगों के जो यहूदी हों** (यह तो यहूदियों ने कहा) **या उन लोगों के जो ईसाई हों** (यह ईसाइयों ने कहा, अल्लाह तआ़ला उन की बात को ग़लत बताते हुए कहते हैं कि) **ये** (ख़ाली) **दिल बहलाने की बाते हैं** (और सच्चाई कुछ भी नहीं), **आप** (उन से यह तो) **कहिए कि** (अच्छा) **अपना सबूत लाओ अगर तुम** (इस दावे में) **सच्चे हो(111)** (सो वो तो क्या सबूत लाएंगे क्योंकि कोई सबूत है ही नहीं अब हम कहते हैं कि) **ज़रूर दूसरे लोग** (भी जन्नत में) **जाएंगे** (फिर इस पर सबूत यह है कि हमारा क़ानून जो सभी आसमानी किताबों को मानने वालों को पहुंच चुका है यह है कि) **जो कोई आदमी अपना मुंह** (दिल से) **अल्लाह की तरफ़ झुका दे** (यानी अ़क़ीदे व आ़माल ठीक रक्खे) **और वो नेक काम करे** (मगर दिखावे के लिए न हों) **तो ऐसे आदमी को उस** (की नेकी) **का बदला मिलता है अल्लाह के पास पहुंच कर, और ऐसे लोगों पर** (क़ियामत में) **न कोई डर** (की बात) **है और न ऐसे लोगों को** (उस दिन कोई) **ग़म होगा** (क्योंकि फ़रिशते ख़ुशख़बरी सुना कर बेफ़िक्र कर देंगे)**(112)**।

नोटः- और यह शान मुसलमानों की है कि वो पहली किताबों को भी मानते हैं और क़ुरआन को और उसके हुक्मों को भी मानते हैं इस लिए वो ही जन्नत के असली हक़दार हैं।

وَ قَالَتِ الْيَهُوْدُ لَيْسَتِ النَّصٰرٰى عَلٰى شَيْءٍ ۠ وَّ قَالَتِ النَّصٰرٰى لَيْسَتِ الْيَهُوْدُ عَلٰى شَيْءٍ ۙ وَّ هُمْ يَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ؕ
كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۱۱۳﴾

आयत नं० 113

और (एक बार कुछ यहूदी और ईसाई इकट्ठे होकर बहस करने लगे और एक दूसरे के दीन को झूटा बताने लगे) **यहूदी कहने लगे कि ईसाई** (मज़हब) **किसी बुनियाद पर** (ठहरा हुआ) **नहीं** (यानी सिरे से ग़लत है) **और इसी तरह ईसाई कहने लगे कि यहूदी** (मज़हब) **किसी बुनियाद पर**

(ठहरा हुआ) **नहीं** (यानी सिरे से ग़लत है) **जब कि ये सब** (लोग आसमानी) **किताबें** (भी) **पढ़ते** (पढ़ाते) **हैं** (यानी यहूदी तौरेत को और ईसाई इन्जील को पढ़ते और देखते हैं और दोनों किताबों में दोनों पैग़म्बरों और दोनों किताबों की तस्दीक़ की गई है और किताबों के क़ानून में कुछ बदलाव होना अलग बात है, और किताब वाले तो ऐसे दावे करते ही थे उन की देखा देखी मुशरिकों को भी जोश आया और) **इसी तरह ये लोग** (भी) **जो कि अनपढ़ हैं उन** (ही किताब वालों) **की सी बात दोहराने लगे** (कि यहूदियों व ईसाइयों का दीन बे बुनियाद है सही रास्ते पर सिर्फ़ हम है) **तो** (यहां सब अपनी-अपनी कहलें) **अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उन सब के बीच** (खुला) **फ़ैसला कर देंगे उन सभी बातों का जिनमें ये एक दूसरे को ग़लत बता रहे थे** (और वो फ़ैसला यह होगा कि सच्चे दीन वालों को जन्नत में भेजेंगे और झूटों को दोज़ख़ में डाल दिया जाएगा)(113)।

नोटः- मतलब यह कि क़ुरआन की इन आयतों ने साफ़ कर दिया कि सिर्फ़ नस्ली तौर पर इस्लाम का नाम रख लेना किसी नतीजे पर नहीं पहुंचा सकता जब तक ईमान और नेक काम को पूरी तरह न अपनाया जाए।

وَ مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسٰجِدَ اللّٰهِ اَنْ یُّذْكَرَ فِیْهَا اسْمُهٗ وَ سَعٰى فِیْ خَرَابِهَا ؕ اُولٰٓىِٕكَ مَا كَانَ لَهُمْ اَنْ یَّدْخُلُوْهَاۤ اِلَّا خَآىِٕفِیْنَ ؕ۬ لَهُمْ فِی الدُّنْیَا خِزْیٌ وَّ لَهُمْ فِی الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِیْمٌ ﴿۱۱۴﴾ وَ لِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَ الْمَغْرِبُ ۗ فَاَیْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِیْمٌ ﴿۱۱۵﴾

आयत नं० 114 से 115

नोटः- यहूदी तो क़िबले का हुक्म बदले जाने के वक़्त तरह-तरह के ऐतराज़ करके कम समझ लोगों के दिलों में शक पैदा करते थे ताकि दीन में शक करके नमाज़ छोड़ बैठें और मस्जिदें वीरान हों, और रोम के कुछ बादशाहों ने जो ईसाइयों के ख़िलाफ़ थे शाम पर हमला करके बैतुल मुक़द्दस की बेदबी की और उस को वीरान किया। और मक्के के मुशरिकों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को काबे में जाने से रोका इस लिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया-

और उस आदमी से ज़्यादा और कौन ज़ालिम होगा जो अल्लाह तआला की मस्जिदों में उन का ज़िक्र (और इबादत) **किये जाने से रोके और इन** (मस्जिदों) **के वीरान** (और उजाड़) **होने** (के बारे) **में कोशिश करे, उन लोगों को तो कभी निडर होकर उन** (मस्जिदों) **में पांव भी न**

रखना चाहिए था (बल्कि जब जाते तो बड़े अदब से जाते) **उन लोगों को दुनिया में भी रूसवाई नसीब होगी और आख़रत में बड़ी सज़ा होगी(114) और** (यहूदियों ने क़िबला बदलने के हुक्म पर ऐतराज़ किया था कि मुसलमान इस दिशा से दूसरी दिशा की तरफ़ क्यों फिर गये अल्लाह तआ़ला इस का जवाब देते हैं कि) **अल्लाह ही मालिक है** (सब दिशाओं का) **पूरब** (का) **भी और पच्छम** (का) **भी** (बस जब वो मालिक है जिस दिशा को चाहे क़िबला बनादे)**, तो तुम लोग जिस तरफ़ भी मुंह करो उधर ही अल्लाह तआ़ला** (की पाक ज़ात) **का रूख़ है, क्योंकि अल्लाह तआ़ला** (ख़ुद सभी दिशाओं और चीज़ों को) **घेरे हुए हैं** (और क़िबले का रूख़ इसलिए ठहराया कि वो) **सब कुछ जानने वाले हैं** (कि हर बात में छुपी भलाई को जानते हैं चूंकि इस बात में भी भलाई छुपी थी इस लिए इसका हुक्म दिया)(115)।

وَقَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ لَّهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿۱۱۶﴾ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ
وَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿۱۱۷﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللّٰهُ اَوْ تَاْتِيْنَآ اٰيَةٌ ؕ
كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ؕ تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ قَدْ بَيَّنَّا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿۱۱۸﴾

आयत नं० 116 से 118

नोटः- कुछ यहूदी हज़रत उज़ैज़ अ़लैहिस्सलाम को अल्लाह का बेटा कहते और ईसाई हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को और अ़रब के मुशरिक फ़रिशतों को अल्लाह की बेटियां कहते थे जैसा कि बहुत सी आयतों में इन बातों की ख़बर दी गई है अल्लाह तआ़ला उन की इस बात को झूटा बताते हुए कहते हैं कि-

और ये लोग (अलग-अलग तरीक़े से) **कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला औलाद रखता है सुबहानल्लाह** (क्या बेतुकी बात है), **बल्कि** (उनके तो औलाद हो ही नहीं सकती क्योंकि अगर औलाद हो तो वो हम जिन्स होगी और उनका कोई हम जिन्स और बराबर का हो नहीं सकता और या वो दूसरे जिन्स की होगी जो कि ऐब की बात है और अल्लाह तआ़ला ऐब से पाक है बस अल्लाह के औलाद होना समझ से परे है- पहली बात तो यह है कि) **अल्लाह तआ़ला ही मालिक है जो कुछ भी आसमानों और ज़मीन में** (मौजूद) **हैं,** (और दूसरी बात यह कि) **सब उन के हुक्म के पाबन्द** (भी हैं जैसे मौत देना ज़िन्दगी देना कि इन हुक्मों को कोई नहीं हटा सकता भले ही कुछ लोग शरीअ़त की पाबन्दी नहीं करते) **हैं**(116) (और तीसरी बात यह है कि अल्लाह तआ़ला) **पैदा करने वाले** (भी)

हैं आसमानों और ज़मीन के, और (चौथी बात पैदा करने वाले भी ऐसे कि) **जब किसी काम को पूरा करना चाहते हैं** (जैसे पैदा करना ही है) **तो बस उसको इतना कह देते हैं कि होजा बस वो** (उसी तरह) **हो जाता है** (इसके लिए उन को किसी सामान की ज़रूरत नहीं पड़ती, और ये चारों बातें सिवाए अल्लाह तआ़ला के किसी और में नहीं पाई जातीं बस साबित हुआ कि उनके कोई औलाद नहीं)(117) **और** (कुछ) **जाहिल** (यहूदी व ईसाई और मुश्रिक) **यह कहते हैं कि** (ख़ुद) **अल्लाह तआ़ला हम से बात क्यों नहीं करते** (चाहे फ़रिशतों के बिना जैसे ख़ुद फ़रिशतों से बात करते हैं या फ़रिशतों के वास्ते से जैसे पैग़म्बरों से वही के वास्ते से बात करते हैं, और अल्लाह तआ़ला या तो ख़ुद हम को शरीअ़त के हुक्म बता दें कि हम को रसूल की ज़रूरत ही न रहे या कम से कम इतना ही कहदें कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारे रसूल हैं तो हम उन को ही रसूल मान कर उन का कहना मान लेंगे) **या** (बात नहीं करते तो) **हमारे पास कोई और ही सबूत** (रसूल होने का) **आ जाए,** (अल्लाह तआ़ला पहले इस बात को जाहिलाना रस्म होना बताते हैं कि) **इस तरह वो** (जाहिल) **लोग भी कहते चले आए हैं जो इन से पहले हुए हैं इन ही की सी** (जाहिलना) **बात** (सो पता चला कि यह कोई ढंग की बात नहीं बस यूं ही कह देते हैं, फिर दूसरे इस की वजह यह है कि) **इन सब** (अगले पिछले जाहिलों) **के दिल** (कम समझी में) **आपस में एक दूसरे जैसे हैं** (इसलिए सब से बात भी एक ही जैसी पैदा हुई, चूंकि बात का पहला हिस्सा बेवक़ूफ़ी था कि ख़ुद को फ़रिशतों और पैग़म्बरों के बराबर समझा इस लिए इसको छोड़ कर बात के दूसरे हिस्से का जवाब दिया जाता है कि तुम तो एक सबूत को लिए फिरते हो) **हम ने तो बहुत से सबूत** (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पैग़म्बर होने के) **साफ़ साफ़ बयान कर दिये हैं** (मगर वो) **उन लोगों के लिए** (नफ़ा देने वाले हो सकते हैं) **जो यक़ीन** (और तसल्ली) **करना चाहते हैं** (और ऐतराज़ करने वाले तो ज़िद और हटधर्मी पर हैं तो ऐसो की तसल्ली कहां हो सकती है)(118)

नोटः- इससे यह भी मालूम हुआ कि अगर पढ़ा लिखा आदमी भी जाहिलों की सी बात करे तो वो भी जाहिल ही है जैसे यहूदियों के आ़लिम थे।

إِنَّآ أَرۡسَلۡنٰكَ بِالۡحَقِّ بَشِيۡرًا وَّ نَذِيۡرًا ۙ وَّ لَا تُسۡـَٔلُ عَنۡ أَصۡحٰبِ الۡجَحِيۡمِ ﴿۱۱۹﴾ وَ لَنۡ تَرۡضٰى عَنۡكَ الۡيَهُوۡدُ وَ لَا
النَّصٰرٰى حَتّٰى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمۡ ؕ قُلۡ إِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الۡهُدٰى ؕ وَ لَئِنِ اتَّبَعۡتَ أَهۡوَآءَهُمۡ بَعۡدَ الَّذِىۡ جَآءَكَ
مِنَ الۡعِلۡمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنۡ وَّلِىٍّ وَّ لَا نَصِيۡرٍ ﴿۱۲۰﴾

आयत नं० 119 से 120

(चूंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शान रहमत वाली है और लोगों के ईमान न लाने से दुखी होते इसलिए आप की तसल्ली के लिए अल्लाह तआ़ला कहते हैं कि ऐ रसूल) **हमने आप को एक सच्चा दीन देकर** (लोगों की तरफ़) **भेजा है कि** (मानने वालों को) **ख़ुशख़बरी सुनाते रहिए और** (न मानने वालों को सज़ा से) **डराते रहिए और आप से दोज़ख़ में जाने वालों के बारे में पूछ न होगी** (कि उन लोगों ने क्यों नहीं माना और क्यों दोज़ख़ में गये आप अपना काम करते रहिए आप को किसी के मानने या न मानने की कोई फ़िक्र नहीं करनी चाहिए)(119) **और कभी ख़ुश न होंगे आप से ये यहूदी और न ईसाई जब तक कि आप** (अल्लाह न करे बिल्कुल) **उनके मज़हब पर न चलने लगें** (और यह हो नहीं सकता बस वो कभी ख़ुश हो नहीं सकतें, और अगर कभी उन की तरफ़ से ऐसी बात आए तो) **आप** (साफ़) **कह दीजिए कि** (भाई) **सीधा रास्ता तो वो रास्ता ही है जिसको अल्लाह ने** (हिदायत का रास्ता) **बताया** (है और सबूतों से ऐसा रास्ता सिर्फ़ इस्लाम होना साबित हो चुका) **है, और** (यह बात कि आप नऊ़ज़ुबिल्लाह उन के मज़हब पर चलें यह हो नहीं सकता) **अगर आप उन की ग़लत बातों पर चलने लगें** (जिसको वो अपना मज़हब समझते हैं मगर वो कुछ घड़ लिया है और कुछ बदला जा चुका है फिर ऐसी हालत में उस को मानें) **जबकि** (वही के वास्ते सही) **इल्म आप के पास आ चुका तो** (ऐसी हालत में तो) **आप का कोई अल्लाह से बचाने वाला न यार मिले न मददगार** (और अल्लाह की नाराज़ी का काम आप कर नहीं सकते इसलिए उनके राज़ी करने की फ़िक्र में न पड़ें)(**120**)।

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَ مَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۲۱﴾

आयत नं० 121

नोटः- इस आयत में उन किताब वालों का ज़िक्र है जिन्होंने सच्चाई जान लेने के बाद जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सच्चा माना और आप के हुक्म को माना।

जिन लोगों को हम ने (तौरेत व इन्जील) **किताब दी वो उस को** (इस तरह) **पढ़ते रहे जिस तरह पढ़ने का हक़ है** (कि समझने की कोशिश भी की और उस पर चलने का इरादा भी किया)**, ऐसे लोग** (बेशक आप के) **इस** (सच्चे दीन और वही के इल्म) **पर ईमान ले आते हैं, और जो आदमी इस को न मानेगा** (किस का नुक़सान करेगा) **ख़ुद ही ऐसे लोग नुक़सान में रहेंगे**

(कि ईमान पर जो फल मिलते वो न मिलेंगे)(121)।

يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَ اَنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۲۲﴾ وَ اتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ
عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّ لَا يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّ لَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّ لَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿۱۲۳﴾ وَ اِذِ ابْتَلٰٓى اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ
بِكَلِمٰتٍ فَاَتَمَّهُنَّ ؕ قَالَ اِنِّيْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًا ؕ قَالَ وَ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ ؕ قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۲۴﴾ وَ
اِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَ اَمْنًا ؕ وَ اتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ؕ وَ عَهِدْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ
اَنْ طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَ الْعٰكِفِيْنَ وَ الرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿۱۲۵﴾ وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّ
ارْزُقْ اَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ قَالَ وَ مَنْ كَفَرَ فَاُمَتِّعُهٗ قَلِيْلًا ثُمَّ اَضْطَرُّهٗٓ اِلٰى
عَذَابِ النَّارِ ؕ وَ بِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۱۲۶﴾ وَ اِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَ اِسْمٰعِيْلُ ؕ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ
اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۱۲۷﴾ رَبَّنَا وَ اجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَ مِنْ ذُرِّيَّتِنَآ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۪ وَ اَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَ تُبْ
عَلَيْنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۲۸﴾

आयत नं० 122 से 128

ऐ बनी इस्राईल मेरी उन नेमतों को याद करो जो मैंने तुम को इनआ़म में दी थी और उस को (भी याद करो) **कि मैंने तुम को बहुत लोगों पर** (बहुत सी बातों में) **बड़ाई दी(122) और तुम डरो ऐसे दिन से** (यानी क़ियामत के दिन से) **जिसमें कोई आदमी किसी की तरफ़ से न कोई हक़ अदा करने पाएगा और न किसी की तरफ़ से कोई बदला** (हक़ की जगह) **लिया जाएगा और न किसी की कोई सिफ़ारिश** (जब कि ईमान न हो) **काम आएगी और न उन लोगों को कोई मदद पहुंचेगी(123) और जिस वक़्त आज़माया** (हज़रत) **इब्राहीम को उनके रब ने कुछ बातों में** (अपने हुक्मों में से) **और वो उन में पूरी तरह कामयाब रहे,** (उस वक़्त) **अल्लाह तआ़ला ने** (उनसे) **कहा कि मैं तुम को** (इसके बदले में पैग़म्बरी देकर या उम्मत बढ़ा कर) **लोगों का इमाम बनाउंगा, उन्होंने दुआ़ की और मेरी औलाद में से भी किसी-किसी को** (नबी बनाइये, अल्लाह तआ़ला ने) **कहा कि** (आप की दुआ़ मन्जूर है मगर उस का क़ानून सुन लीजिए कि) **मेरा** (यह पैग़म्बरी का) **ओहदा** (क़ानून के) **ख़िलाफ़ चलने वालों को न मिलेगा** (तो ऐसे लोगों को साफ़ जवाब है लेकिन हुक्म मानने वालों में से कुछ को नबी बनाया जाएगा)**(124) और** (वो वक़्त भी याद

कीजिए कि) **जिस वक़्त हम ने ख़ाना काबा को लोगों की इबादत की जगह और अमन** (की जगह) **बनाया, और** (हुक्म दिया कि) **बरकत हासिल करने के** (लिए) **मक़ामे इब्राहीम को** (कभी-कभी) **नमाज़ पढ़ने की जगह बना लिया करो, और हम ने** (काबे की तामीर के वक़्त हज़रत) **इब्राहीम और** (हज़रत) **इस्माईल** (अ़लैहिमुस्सलाम) **की तरफ़ हुक्म भेजा कि मेरे** (इस) **घर को ख़ूब पाक** (साफ़) **रक्खा करो बाहर से आने वाले और यहां बसने वाले लोगों** (की इबादत के वास्ते) **और रूकू और सजदा करने वालों के वास्ते**(125) **और** (वो वक़्त भी याद कीजिए) **जिस वक़्त इब्राहीम** (अ़लैहिस्सलाम) **ने दुआ़ की कि या रब मेरे इस** (जगह) **को अमन** (सलामती) **वाला एक** (आबाद) **शहर बना दीजिए और इसके बसने वालों को फलों** (की क़िस्म) **से रोज़ी दीजिए** (और मैं सब बसने वालों को नहीं कहता बल्कि ख़ास) **उनको** (कहता हूं) **जो उन में अल्लाह तआ़ला पर और क़ियामत के दिन पर ईमान रखते हों** (बाक़ी लोगों को आप जानें), **अल्लाह तआ़ला ने कहा** (कि चूंकि रोज़ी हमारी सब के लिए है इसलिए वो सब को दूंगा मोमिन को भी) **और उस आदमी को भी जो काफ़िर है** (लेकिन आख़िरत का हिस्सा सिर्फ़ ईमान वालों के लिए है) **इसलिए ऐसे आदमी को** (जो कि काफ़िर है) **थोड़े दिनों** (यानी दुनिया में) **तो ख़ूब आराम बरताउंगा** (लेकिन) **फिर** (मौत के बाद) **उस को खींच कर दोज़ख़ के अ़ज़ाब में पहुंचा दूंगा, और** (अल्लाह बचाए) **ऐसी पहुंचने की जगह तो बहुत बुरी है**(126) **और** (वो वक़्त भी याद कीजिए) **जब कि उठा रहे थे इब्राहीम** (अ़लैहिस्सलाम) **दीवारें ख़ाना काबा की और** (उनके साथ) **इस्माईल** (अ़लैहिस्सलाम) **भी,** (और यह भी कहते जाते थे कि) **या रब हमारे** (यह ख़िदमत) **हम से क़ुबूल कीजिए, बेशक आप ख़ूब सुनने वाले जानने वाले** (हैं हमारी दुआ़ओं को सुनते हैं हमारी नीयतों को जानते) **हैं**(127) **या रब हमारे और** (हम दोनों यह दुआ़ भी करते हैं कि) **हम को अपना और ज़्यादा ताबेदार बना लीजिए और हमारी औलाद में से भी एक ऐसी उम्मत पैदा कीजिए जो आप की ताबेदार हो, और हम को हमारे हज के हुक्म** (और तरीक़े) **भी बता दीजिए और हमारी तौबा क़ुबूल कीजिए, बेशक आप ही तौबा क़ुबूल करने वाले रहमत वाले हैं**(128)।

नोटः- ख़ाना काबा की तामीर असल में हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के वक़्त से थी लेकिन बाद में यह टूट जाने की वजह से फिर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को दोबारा उन्हीं बुनियादों पर तामीर करने का हुक्म दिया गया।

رَبَّنَا وَ ابْعَثْ فِيهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَ يُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ وَ يُزَكِّيْهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ
الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۱۲۹﴾

आयत नं० 129

(और इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह तआ़ला से यह भी दुआ़ की कि) **या रब हमारे इन** (हमारी औलाद) **में से एक** (ऐसा) **रसूल भेज दीजिए जो उन को आप की आयतें पढ़ कर सुनाए और उन को क़ुरआन व हिकमत** (यानी सुन्नत) **सिखाए और उन को** (हर तरह की गन्दगी से) **पाक करे, बेशक आप ही बहुत ज़बरदस्त** (ताक़त वाले) **बड़ी हिकमत वाले हैं**(129)।

नोटः- यह दुआ़ जनाब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में की गई है।

وَ مَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ اِبْرٰهٖمَ اِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ ؕ وَ لَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا ۚ وَ اِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ
الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۳۰﴾ اِذْ قَالَ لَهٗ رَبُّهٗۤ اَسْلِمْ ۙ قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۳۱﴾ وَ وَصّٰى بِهَاۤ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ وَ يَعْقُوْبُ ؕ يٰبَنِيَّ
اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۱۳۲﴾

आयत नं० 130 से 132

और इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) **के दीन से तो वो** (आदमी) **ही फिरेगा जिस को कुछ भी समझ न हो, और** (ऐसे दीन को छोड़ने वाले को क्योंकर बेवक़ूफ़ न कहा जाए जिस की यह शान हो कि उसी की वजह से) **हम ने उन** (इब्राहीम अलैहिस्सलाम) **को** (पैग़म्बरी के लिए) **दुनिया में चुना और** (उसी की वजह से) **वो आख़रत में बड़े नेक लोगों में गिने जाते हैं**(130) (और पैग़म्बरी के लिए उस वक़्त चुने गये थे) **जब कि उन से उन के रब ने** (उनके दिल में) **कहा कि तुम** (अल्लाह तआ़ला की) **ताबेदारी करो उन्होंने कहा कि मैं ताबेदार हूं सारी दुनिया के रब का** (बस इसी बात पर हमने उन को नबी बनाया)(131) **और इसी** (दीन पर रहने) **का हुक्म कर गये हैं इब्राहीम** (अ़लैहिस्सलाम) **अपने बेटों को और** (इसी तरह) **याक़ूब** (अ़लैहिस्सलाम) **भी** (अपने बेटों को, कि) **मेरे बेटो! अल्लाह तआ़ला ने इस दीन** (इस्लाम) **को तुम्हारे लिए चुन लिया है तो तुम** (मरते दम तक इसको मत छोड़ना और) **सिवाए इस्लाम के और किसी हालत पर जान मत देना** (यानी मरते दम तक मुसलमान ही रहना)(132)।

नोटः- यहूदी, ईसाई व अरब के मुशरिक भी हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को अपना बड़ा मानते थे।

और हर गिरोह यह कहता था कि हम इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के तरीक़े पर हैं मगर क़ुरआन ने साफ़ कर दिया कि उनका तरीक़ा वो ही था जो इस्लाम का तरीक़ा है और ज़्यादा पैग़म्बर उन्हीं की औलाद में से हुए।

اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ ۙ اِذْ قَالَ لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِىْ ؕ قَالُوْا نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَ
اِلٰهَ اٰبَآئِكَ اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ وَ اِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۖۚ وَّ نَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿۱۳۳﴾ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا
كَسَبَتْ وَ لَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۳۴﴾

आयत नं० 133 से 134

क्या तुम (लोग उस वक़्त) **ख़ुद मौजूद थे जिस वक़्त याक़ूब** (अ़लैहिस्सलाम) **का आख़री वक़्त आया** (और) **जिस वक़्त उन्होंने अपने बेटों से** (वादा लेने के लिए) **पूछा कि तुम लोग मेरे** (मरने के) **बाद किस चीज़ की इबादत करोगे, उन्होंने** (एक राय हो कर) **जवाब दिया कि हम उस** (पाक ज़ात) **की इबादत करेंगे जिसकी आप और आप के बाप दादा** (हज़रत) **इब्राहीम व इस्माईल व इसहाक़** (अ़लैहिमुस्सलाम) **इबादत करते आए हैं यानी वो ही माबूद जो अकेला है (जिसका कोई साझी नहीं), और हम** (हुक्मों में) **उसी के ताबेदार रहेंगे(133) यह** (उन बुज़ुर्गों की) **एक जमाअ़त थी** (जो अपने ज़माने में) **हो चुकी, उन के काम उन का किया हुआ आएगा और तुम्हारे काम तुम्हारा किया हुआ, और तुम से उनके किये हुए कामों की पूछ भी तो न होगी(134)।**

नोटः- इससे मालूम हुआ कि बाप दादा के नेक काम औलाद के लिए काफ़ी नहीं होंगे जब तक वो ख़ुद अपने कामों को ठीक न करेंगे, इसी तरह बाप दादा के बुरे कामों का अज़ाब भी औलाद पर न पड़ेगा जब कि ये नेक काम करते हों।

وَ قَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا ؕ قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ حَنِيْفًا ؕ وَ مَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۳۵﴾ قُوْلُوْۤا اٰمَنَّا
بِاللّٰهِ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلٰۤى اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ وَ اِسْحٰقَ وَ يَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَاۤ اُوْتِىَ مُوْسٰى وَ عِيْسٰى
وَ مَاۤ اُوْتِىَ النَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۖ وَ نَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿۱۳۶﴾ فَاِنْ اٰمَنُوْا بِمِثْلِ مَاۤ
اٰمَنْتُمْ بِهٖ فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَ اِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا هُمْ فِىْ شِقَاقٍ ۚ فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۱۳۷﴾ ؕ
صِبْغَةَ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً ۫ وَّنَحْنُ لَهٗ عٰبِدُوْنَ ﴿۱۳۸﴾

आयत नं० 135 से 138

और ये (यहूदी व ईसाई) **लोग** (मुसलमानों से) **कहते हैं कि तुम लोग यहूदी हो जाओ** (यह तो यहूदियों ने कहा था) **या ईसाई हो जाओ** (यह ईसाइयों ने कहा था, तो) **तुम भी सीधा रास्ता पालोगे,** (ऐ पैग़म्बर) **आप** (जवाब में) **कह दीजिए कि हम तो** (यहूदी या ईसाई कभी न होंगे, बल्कि हज़रत) **इब्राहीम के दीन** (यानी इस्लाम) **पर रहेंगे जिस में कमी का नाम नहीं** (जबकि यहूदी व ईसाई मज़हब में गड़बड़ हो जाने के बाद कमी आ गई)**, और इब्राहीम** (अ़लैहिस्सलाम) **मुशरिक भी न थे(135)** (मुसलमानो! यहूदियों और ईसाईयों से इस दीन के बारे में) **कह दो कि हम ईमान रखते हैं अल्लाह पर और उस** (हुक्म) **पर भी जो हमारे पास** (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वास्ते से) **भेजा गया और उस** (हुक्म) **पर भी जो** (हज़रत) **इब्राहीम और** (हज़रत) **इस्माईल और** (हज़रत) **इसहाक़ और** (हज़रत) **याक़ूब** (अ़लैहिमुस्सलाम) **और** (हजरत) **याक़ूब की औलाद** (में जो नबी हुए हैं उन) **की तरफ़** (वही के वास्ते से) **भेजा गया और उस** (हुक्म और मोजिज़े) **पर भी जो** (हज़रत) **मूसा** (अ़लैहिस्सलाम) **और** (हज़रत) **ईसा** (अ़लैहिस्सलाम) **को दिया गया और उस पर भी जो कुछ दूसरे नबियों को दिया गया उनके रब की तरफ़ से** (सो हम उन सब पर ईमान रखते हैं, और ईमान भी ऐसा कि) **हम उन में से किसी एक में भी** (दूसरे से ईमान लाने में) **फ़र्क़ नहीं करते, और हम तो अल्लाह तआ़ला के ताबेदार हैं** (उन्होंने हम को यह दीन बताया हम ने अपना लिया)**(136) तो अगर वो** (यहूदी व ईसाई) **भी इस तरह से ईमान ले आएं जिस तरह से तुम** (मुसलमान) **ईमान लाए हो तब तो वो भी सीधी राह पाजाएंगे, और अगर वो** (इससे) **मुंह मोंड़ें तो** (तुम कुछ अचम्भा न करो क्योंकि) **वो लोग तो** (सदा से) **मुख़ालिफ़ ही रहे हैं** (और अगर उन की दुशमनी से कुछ डर हो) **तो** (समझ लीजिए कि) **आप की तरफ़ से जल्दी ही उन से अल्लाह तआ़ला निमट लेंगे** (तुम्हें फ़िक्र करने की ज़रूरत नहीं)**, और अल्लाह तआ़ला** (तुम्हारी और उन की बातें) **सुनते हैं** (और तुम्हारे और उनके बरताव को) **जानते हैं(137)** (ऐ मुसलमानो! कहदो कि) **हम** (दीन की) **उस हालत पर रहेंगे जिसमें** (हम को) **अल्लाह तआ़ला ने रंग दिया है** (और रंग की तरह हमारी रग-रग में भर दिया है) **और** (दूसरा) **कौन है जिस के रंग देने की हालत अल्लाह तआ़ला** (के रंग देने की हालत) **से अच्छी हो** (जब और कोई दूसरा ऐसा नहीं तो हमने और किसी का दीन भी नहीं अपनाया) **और** (इसीलिए) **हम उसी के ग़ुलाम बन गये हैं(138)।**

नोटः- अल्लाह तआ़ला के रंग देने का मतलब यह है कि ईमान वाला हर बात से मुसलमान दिखाई दे।

قُلْ أَتُحَاجُّونَنَا فِي اللّٰهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۚ وَلَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهُ مُخْلِصُونَ ﴿١٣٩﴾ أَمْ
تَقُولُونَ إِنَّ إِبْرٰهٖمَ وَإِسْمٰعِيلَ وَإِسْحٰقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطَ كَانُوا هُودًا أَوْ نَصٰرٰى ۗ قُلْ ءَأَنْتُمْ أَعْلَمُ أَمِ
اللّٰهُ ۗ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهُ مِنَ اللّٰهِ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٤٠﴾ تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ
خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤١﴾

आयत नं० 139 से 141

आप (इन यहूदियों व ईसाइयों से) **कह दीजिए कि क्या तुम लोग** (अब भी) **हम से बहस किये जाते हो अल्लाह तआ़ला के बारे में** (कि वो हम को क़ियामत में न बख़्शेगें) **जब कि वो हमारा और तुम्हारा** (सबका) **रब** (और मालिक) **है** (इसलिए तुम्हारी कोई ख़ास बात न रही) **और हम को हमारा किया हुआ मिलेगा और तुम को तुम्हारा किया हुआ मिलेगा** (यहां तक तो तुम भी मानते हो)**, और** (अल्लाह तआ़ला का शुक्र है कि) **हमने सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला** (को ख़ुश करने) **के लिए अपने** (दीन) **को** (शिर्क जैसी चीज़ों से) **ख़ालिस कर रक्खा है** (जब कि तुम्हारे दीन में बदलाव होने के साथ शिर्क भी मिला हुआ है फिर हमारी बख़्शिश न होने का क्या मतलब)(139) **या** (अब भी अपने को हक़ पर साबित करने को) **कहे जाते हो कि** (हज़रत) **इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक़ और याक़ूब** (अ़लैहिमुस्सलाम) **और उन की औलाद में** (जो नबी हुए हैं ये सब) **यहूदी या ईसाई थे,** (और इस तरह से अपना हक़ पर होना साबित करना चाहते हो तो इसके जवाब में) **आप** (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक इतनी छोटी सी बात उन से) **कह दीजिए कि** (अच्छा यह बताओ कि) **तुम ज़्यादा जानते हो या अल्लाह तआ़ला** (और खुली बात है कि अल्लाह ही ज़्यादा जानते हैं और वो इन नबियों का दीन इस्लाम पर होना साबित कर चुके हैं जैसा अभी ऊपर आया)**, और** (जानते हैं ये काफ़िर भी मगर छुपाते हैं तो) **ऐसे आदमी से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो ऐसी गवाही को छुपाए जो उसके पास अल्लाह की तरफ़ से पहुंची हो, और** (ऐ किताब वालो) **अल्लाह तआ़ला तुम्हारे किये हुए कामों से अन्जान नहीं है** (बस जब ये बुज़ुर्ग यहूदी या ईसाई न थे तो तुम उनके दीन पर कब हुए फिर तुम्हारा हक़ पर होना साबित न हुआ)(140) **यह** (उन बुज़ुर्गों की) **की जमाअ़त थी जो** (अपने ज़माने में) **हो चुकी उन के काम उन का किया हुआ आएगा और तुम्हारे काम तुम्हारा किया हुआ आएगा, और तुम से उनके किये हुए** (कामों) **की पूछ भी तो न होगी**(141)।

नोटः- अपने दीन को अल्लाह के लिए ख़ालिस करने का मतलब यह है कि इन्सान अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराए और अपने नेक कामों को ख़ालिस अल्लाह के लिए करे लोगों को दिखाने के लिए न करे न उनकी तारीफ़ व शुक्र की तरफ़ ध्यान दे इसी को इख़लास कहते हैं कुछ बुज़ुर्गों ने कहा है कि इख़लास एक ऐसा अ़मल है जिस को न तो फ़रिशते पहचान सकते हैं और न शैतान वो सिर्फ़ बन्दे और अल्लाह के बीच एक राज़ है।